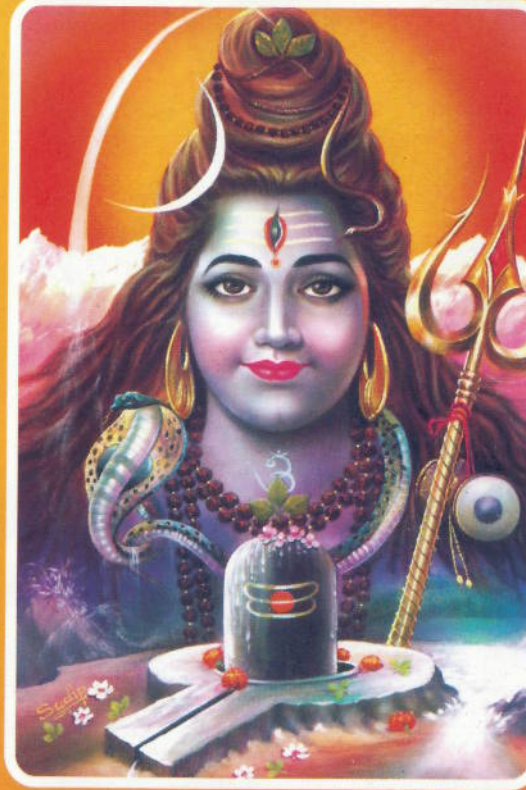




नमः शिवाय हर - हर महादेव

प्राचीन अमरनाथ की अमर कहानी

- शिवजी द्वारा दिये गये वरदान के अनुसार इस कथा को श्रद्धा पूर्वक पढ़ने या सुनने वाले मनुष्य शिवलोक को प्राप्त करते हैं।
- यह अमर कथा माता पार्वती तथा भगवान शंकर संवाद हैं। स्वयं भगवान सदाशिव शंकर इस कथा के वर्णन करने वाले हैं।
- इस संवाद का संग्रह भृगुर्षि संहिता नीलमत पुराण और लावनी ब्रह्मज्ञान से बड़े ही यत्न से किया गया है।
- यह परमपवित्र कथा लोक व परलोक को सुख प्रदान करने वाली है।



Publisher:
AMARJOT SINGH KOHLI

Printers:
GAGAN PRINTERS,
189, Guru Harkishan Nagar, Paschim Vihar,
New Delhi-110087
Tel. : 011-42340571, Mob. : 9953574762

Sri Nagar Office:
SARDARNI CHARANJEET KAUR KOHLI
Lal Chowk, Sri Nagar, Kashmir
Tel : 2450067, (R) : 2433604, M. : 09419011877

Wholesale Dealers:
MODERN GENERAL STORE
Main Bazar, Katra, Vaishno Devi, J&K
Tel. : 232065

KRISHANA PUSTAK SANSAR
Panther Road, Near Bandhu Hotel, Katra
Tel. : 01991-234438 Mob. : 9419164205

Written by:
SARDAR IQBAL SINGH KOHLI, M.com
SH. SHAM LAL BARU, Katra
Dr. GAGAN PREET KOHLI (Delhi)
Er. Bino Sahni (Sr. System Engineer, Microsoft, U.S.A.)

Price Rs. 30/-





प्रार्थना

इस अमरकथा का प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों से संकलन किया गया है, जिसमें भृगु संहिता, नीलमत, पुराण और लावनी ब्रह्मज्ञान उल्लेखनीय है। अनेक विद्वानों का विचार है कि यह कथा संसार में एक कबूतर के माध्यम से आई परन्तु कुछ कहते हैं कि यह कथा जगत में एक तोते द्वारा आई है। यह एक विवाद का विषय है। इस पर विवाद नहीं करना चाहिए। यात्रीगण स्वयं ही विचार कर सकते हैं कि अमरनाथ जी कि पवित्र गुफा में सर्दी इतनी अधिक है कि वहां पर तोता रह ही

नहीं सकता फिर तोते का अण्डा कहां से आया। हां कबूतर की बात तो कुछ समझ में आती है क्योंकि कबूतर पक्षी बहुत सर्दी में भी रह सकता है और अमरनाथ गुफा में बहुत से कबूतर आपको दिखाई दे सकते हैं। वहां पर तोते का नाम भी नहीं है। यात्रीगण भी इन पवित्र कबूतरों के दर्शन करते हैं। यह अमरकथा लोक व परलोक को सुख देने वाली मानी गई है। स्वयं भगवान् श्री सदाशिव द्वारा दिए गए वरदान के अनुसार इस कथा को श्रद्धापूर्वक पढ़ने व सुनने वाला मनुष्य शिवलोक को प्राप्त करता है। यह अमरकथा भगवान शंकर के श्रीमुख से भगवती पार्वती माता को सुनाई गई थी। वहां वह प्राचीन अमरकथा, जो एक कबूतर ने सुनी और वह अमर हो गया और इसी के माध्यम से यह पवित्र कथा आपके आगे प्रस्तुत है।

इस कथा को आप तक पहुंचाने में अगर किसी यात्री की धार्मिक भावना को ठेस पहुंचे तो हम क्षमा चाहते हैं।

दो शब्द



भगवान श्री शंकर जी इस अमरकथा के रचयता नहीं थे, उन्होंने भी यह पवित्र कथा देवलोक में देवताओं से सुनी थी और पार्वती माता को सुनाई थी। श्री सदाशिव को स्मरण हुआ कि यदि इस कथा के सुनने वाले अमर होते गये तो पृथ्वी का संचालन बंद हो जाएगा, और देवताओं की प्रतिष्ठा में अन्तर आ जाएगा। अतः शंकर भगवान ने स्वयं ही श्राप दिया कि 'जो कोई भी इस कथा को सुनेगा वह अमर नहीं होगा परन्तु हां, वह शिवलोक अवश्य प्राप्त करेगा। तोता या कबूतर को इस कथा को आप तक पहुंचाने का माध्यम मात्र है। यात्रियों को इस वाद-विवाद में न पड़कर शिवलोक की प्राप्ति के लिए सोचना चाहिए जिससे इस जगत का कल्याण हो। प्रस्तुत अमरकथा, जो विश्व कल्याणक है, उसको हमने 'अमरकथा कबूतर वाली' नाम दिया है - कई लोग इसी कथा को तोते वाली कहते हैं, भेद केवल नाम का है - न कबूतर बोल सकता है - न तोता कुछ कह सकता है। यह कथा भगवान सदाशिव ने देवलोक में सुनकर फिर पार्वती को सुनाई थी। अमरनाथ यात्रा में कबूतरों को बहुत पवित्रमाना गया है क्योंकि यह कबूतर भगवान शंकर के कहने पर गुफा में रह रहे हैं। इनके दर्शनों से समस्त पाप दूर हो जाते हैं। श्री अमरनाथ जी की गुफा में कबूतरों को देखकर जो भक्तगण 'जय' शब्द का उच्चारण करते हैं वह स्वयं ही शिव स्वरूप हो जाते हैं।

प्रार्थना

सत्यं-शिवं-सुन्दरं महादेव हैं, सदा तपस्यालीन।
भक्तन-तन-मन पीर को, हरने वाले प्रवीन॥
मानुष तन घट पाप से, थरता है दिन-रैन।
बिन पूजे शिव स्वामी के, क्योंकर पावै चैन॥
मधुर नशीली पवन से, लोपित अन्तर का ज्ञान।
यों झूठे जग पापा का, करता मन सम्मान॥
जग के मांही भेजकर, महा कियो उपकार॥
दीन भक्त विनती करे, करो दया दातार॥
आप अमर, प्रसंग अमर, सृष्टि चक्र महान।
अमर कथा वर्णन करूं, दो बल, बुद्धि, ज्ञान॥



चलो अमरनाथ जी

श्री अमरनाथ की अमर कहानी

कबूतर वाली

इस अमरकथा का नाम अमर-कथा इसलिए है कि इसके श्रवण करने से शिवधाम की प्राप्ति होती है। यह वह परम पवित्र कथा है जिसके सुनने से सुनने वालों को अमरपद की प्राप्ति होती है तथा वह अमर हो जाते हैं। यह कथा श्री शंकर भगवान ने इसी गुफा में (श्री अमरनाथ जी गुफा में) भगवती पार्वती जी को सुनाई थी। इस कथा को सुनकर ही श्री शुकदेवजी अमर हो गये थे। जब भगवान् श्री शंकर यह कथा भगवती पार्वती को सुना रहे थे। तो वहाँ एक तोते का बच्चा भी इस परम पवित्र कथा को सुन रहा था और इसे सुनकर फिर उस तोते के बच्चे ने श्री शुकदेव स्वरूप को पाया था। 'शुक' संस्कृत में तोता को कहते हैं और इसी कारण बाद में फिर मुनि 'शुकदेव' के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुए। यह कथा भगवती पार्वती तथा भगवान् शंकर का संवाद है। यह परम-पवित्र कथा लोक व परलोक का सुख देने वाली है। शंकर भगवान् और जगत्माता के इस संवाद का वर्णन भृगु-संहिता,

नीलमत-पुराण, तीर्थ संग्रह आदि ग्रन्थों में पाया जाता है। हम यहां पर आपके सम्मुख यह परम पवित्र कथा विस्तारपूर्वक रखेंगे। देव-ऋषि नारद का कैलाश पर आना और श्री पार्वती से पूछना कि भगवान् शंकर के गलें में रुण्डमाला क्यों है?

एक बार देव-ऋषि नारद कैलाश पर्वत पर भगवान् श्री शंकर के स्थान पर दर्शनार्थ पधारे। भगवान् श्री शंकर उस समय वन-विहार के लिए गये हुए थे और भगवती पार्वती यहां पर विराजमान थी। श्री पार्वतीजी ने देव-ऋषि नारद को प्रणाम किया और सादर आसन दिया। फिर वह बोली-“देव-ऋषि! आपने यहां पधार कर हम पर बड़ी कृपा की, अपने आने का कारण कहिए।”

देव-ऋषि नारद बोले- “देवी! मेरा एक प्रश्न है, उसका उत्तर चाहता हूँ।”

श्री पार्वती जी ने कहा- “कहिए।”

नारद जी बोले—“देवी! मुझे इस बात का बड़ा आश्चर्य है! भगवान् श्री शंकर, जो हम दोनों से बड़े हैं, उनके गले में रूण्डमाला क्यों है?”

श्री पार्वती जी बोली— “इसका कारण मैं नहीं जानती।”

नारदजी ने कहा “ आप यथासमय इसका कारण भगवान् श्री शंकर से पूछियेगा।”

इतना कहकर देव-ऋषि नारद वहां से चले गये। अब तो भगवती सती - पार्वती के मन में भी इस बात का भेद जानने के लिए तीव्र जिज्ञासा उत्पन्न हो गई। न जाने यह भेद महादेव ने



मुझसे क्यों छिपाया हुआ है? ऐसा सोचकर वह महादेव जी के लौटने की प्रतीक्षा करने लगी। परन्तु उन्हें ज्ञान था कि शंकरजी की तपस्या और समाधि के समय का पूर्वानुमान लगाना कठिन है। पर्याप्त समय व्यतीत हो जाने पर भगवान् शंकर की समाधि-सम्पन्न हुई और कैलाश पर्वत स्थित अपने निवास स्थान की ओर लौटे, जहां पार्वती जी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थीं।

अनायास ही तपस्या, शक्ति और शान्ति-क्रोध के प्रतिरूप भगवान ने निज-लोक में प्रवेश किया। उनको देखकर श्रद्धालु भक्तों तथा उस लोकवासी सभी प्राणियों को जो सुखानुभूति हुई उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

अपने प्राणनाथ भगवान-शंकरजी के दर्शनकर, माता पार्वती का हृदय-कमल भी खिल गया। उन्होंने शिवजी महाराज की विभिन्न प्रकार से आरती और सेवा-सुश्रुषा की। अधिक दिनों के पश्चात् तथा विशिष्ट प्रकार की सेवा-भावना के प्रदर्शन के कारण महादेव भी अति प्रसन्न हुए। भगवान शंकर जब प्रसन्न होते हैं तो संतो और भक्तों के संकट समाप्त हो जाते हैं।

शंकर जी के गले में रूण्डमाला क्यों है?

माता पार्वती भगवान शंकर के मनोहर रूप को अपलक निहारती रहीं। इसी बीच उनकी दृष्टि उनके नीलकण्ठ पर सुशोभित मुण्डमाला पर पड़ी। तो नारद जी का पूछा हुआ प्रश्न संजीव हो उठा। उन्होंने शंकर जी से इस प्रकार पूछा कि-

“हे प्राण नाथ, आप अपने भक्तों की सभी आशाएं पूर्ण किया करते हैं। आप ये भी जानते हैं कि मैं आपकी चिरसंगिनी होने के साथ-साथ आप की भक्त भी हूँ और आपके रहते या आपकी अनुपस्थिति में भी आपकी पावन स्मृति में डूबकर निरन्तर अन्तर्मन से पूजा किया करती हूँ। और मेरे मन के प्रत्येक प्रश्न का निवारण करने में आप समर्थ हैं।”

“हे नाथ, मैं यह जानना चाहती हूँ कि आप अपने गले में रूण्डमाला क्यों धारण करते हैं?” पार्वतीजी के मनोहर मुख से ऐसे प्रश्न सुनकर शंकरजी पर विस्मय का भाव निखर आया। ऐसा प्रश्न पार्वती ने पहले कभी नहीं पूछा था और जिसके उत्तर को भी वह पार्वती को बताना उचित नहीं समझते थे।

भगवान शंकर मानो पार्वती के मन को समझाने की युक्ति सोच रहे थे। लेकिन बीच में ही पार्वती ने यह कह कर ध्यान भंग कर दिया-

“हे सर्वेश्वर, आप शान्त क्यों हैं? क्या मेरा अनुरोध आपको स्वीकार नहीं है? मेरा प्रश्न आपके लिए इतना कठिन तो नहीं है, क्योंकि आप सर्वज्ञ हैं।”

पार्वती की पुनः प्रार्थना पर शंकर जी- मानों इच्छा के विरुद्ध भी, बोलने के लिए बाध्य हो गए और उन्होंने पार्वती को इस प्रकार समझाना प्रारम्भ कर दिया-

“हे पार्वती उपरोक्त प्रश्न के उत्तर का ज्ञान आपके हित में नहीं है। मैं चाहता हूँ कि इस विषय पर हठ धारण न करके आप शान्तिपूर्वक लोक आनन्द की सुमधुरता में विचरण करें।”

शंकरजी के बार-बार समझाने पर भी पार्वती की उत्तर जानने की लालसा पुष्ट होती गई और उन्होंने इस प्रकार के नाटकीय हाव-भाव हठ-पूर्वक व्यक्त किए कि शंकरजी उत्तर देने के लिए जैसे विवश हो गए। भगवान शंकर ने पार्वती के प्रश्न का उत्तर देना प्रारम्भ कर दिया।

‘हे पार्वती, मेरे द्वारा रूण्डमाला पहने जाने का कारण बड़ा रहस्यमय है। आप जितने रूण्ड (मुण्ड) मेरी इस कण्ठमाला में देख रही हो उतनी ही बार तुम्हारा जन्म हुआ है और तुम्हारे प्रत्येक जीवन की समाप्ति पर मैंने तुम्हारे रूण्ड को क्रमशः माला के रूप में धारण किया है।”

भगवान शंकर के मुख से परमगूढ़ रहस्य को जानकर पार्वतीजी चकित रह गई। वह मन्त्र-मुग्ध होकर बोल उठीं - हे प्रभो, आपको मेरे प्रत्येक जीवन के हर एक कार्यकलाप, जीवन-मरण आदि का सम्पूर्ण ज्ञान है? क्या आप अमर हैं? और मैं मरती पैदा होती रही हूँ? आपने अपनी अमरता का कारण सदैव मुझसे छुपाये रखा जो शायद आपके गूढ़ ज्ञानानुसार उचित ही होगा। परन्तु इस रहस्य की जानकारी पर मेरी यह जानने की इच्छा है कि आपकी इस शाश्वत अमरता का क्या कारण है? आप कृपा करके इस तथ्य के ज्ञान का भी दान का कष्ट करें।

पार्वती के हठीले स्वभाव से शंकरजी परिचित थे। उनको इस तथ्य का पूर्वानुमान था कि पार्वती की प्रश्नोत्तर के बिना तृप्ति



होना किसी भांति भी सम्भव नहीं है। अतः उन्होंने अपनी अमरता का कारण बताना प्रारम्भ किया।

‘हे पार्वती! एक कथा है, जिसको सुनने वाला व्यक्ति अमर हो जाता है। मैंने उस अमरकथा को सुना है। उस पर चिंतन कर लोक-कल्याण के अनेक कार्यों को सम्पन्न किया है। अमर कथा भगवान सदाशिव की अनेक लीलाओं- कार्य-कलापों की एक अविस्मरणीय कहानी है। मैं उस अमरकथा को सुनने मात्र से ही अमर हूँ।”

भगवान् शंकर की अमरता का कारण जानकर पार्वती ने कहा- “भगवान्, मैं भी जन्म-मरण के दुखदायी बन्धन से मुक्ति प्राप्त करना चाहती हूँ। हृदयआप कृपा करके उस अमरत्वदाता अमर कथा का सम्पूर्ण प्रसंग मुझे भी सुना दीजिए। मैं आपके चरण कमलों में रहकर सदैव आपकी सेवा करना चाहती हूँ।”

पार्वती जी आग्रहपूर्वक बार-बार हठ करने लगीं- “तो फिर मुझे भी यह अमरकथा सुना दीजिए ना।”

अब श्री शंकर जी के पास अमरकथा सुनाने के अतिरिक्त और कोई उपाय न बचा। (वास्तव में यह नारद जी की सोची-समझी योजना के अर्न्तगत, लोकहित के लिए ही था। वह लोककल्याण हेतु, शंकरजी के मुख से अमरकथा का प्रसंग सुनाना चाहते थे।) प्रत्यक्ष-रूप से शंकरजी का यह अनुरोध, अपनी इच्छा के विरुद्ध, स्वीकार करना पड़ा।

अब समस्या यह थी कि पार्वती के अतिरिक्त अन्य कोई जीव ‘अमरकथा’- को न सुने। अन्यथा, सृष्टि के संचालन की व्यवस्था बिगड़ सकती थी। सभी प्राणी अमर होने लगे, तो देवों

की प्रतिष्ठा में अन्तर आ जाएगा। अतः भगवान् शंकर किसी निर्जन और सुरक्षित- स्थान की खोज करते-करते कैलाश-पर्वत के इस क्षेत्र (श्री अमरनाथ-क्षेत्र) में आ पहुँचे। आजकल जहाँ पहलगांव कस्बा बना है, इस स्थान के आगे चन्दनवाड़ी और शेषनाग झील होते हुए, पंचतारणी, महसगुनस इत्यादि चोटियों को पार करके अन्ततः श्री अमरनाथ की गुफा के पास पहुँच गए। बाद में, इन सभी स्थानों का नामकरण किस प्रकार हुआ, यह भी रोचक प्रसंग है। इसका विवरण आप अगले पृष्ठों ‘श्री अमरनाथ गुफा के अर्न्तगत पढ़ेंगे।

निर्जन-गुफा में प्रवेश के बाद भी शंकर-भगवान् यह सुनिश्चित कर लेना चाहते थे कि आस-पास कोई जीवन न हो। अतः श्री शंकरजी ने आसन लगाया और कलाग्नि रूद्र नामक एक गण प्रकट किया और उसे आज्ञा दी-‘चहूँ ओर एक ऐसी अग्नि प्रगट करो जिसमें कि समस्त जीवधारी मर जावे।’



श्री शुकदेव का जन्म

भगवान् शंकर की आज्ञा पाकर कालाग्नि ने ऐसा ही किया और फिर अदृश्य हो गया।

परन्तु होनी बड़ी बलवान् होती है। जिस आसन पर भगवान् श्री भगवान् श्री शंकर बैठे थे, उसके नीचे एक तोते का अण्डा पहले से ही था, जो कि कालाग्नि को दिखाई नहीं दिया। वह नष्ट होने से बच गया। इसके दो कारण थे— एक तो अण्डा जीवधारीयों की श्रेणी में नहीं आता, दूसरे शंकरजी की मृगछाला के नीचे होने से उनकी शरण पा गया।

इसके पश्चात् भगवान् श्री शंकर नेत्र मूंदकर, एकाग्रचित्त हो, पार्वती जी को अमरकथा सुनाने लगे और पार्वतीजी उनके हर वाक्य पर हुंकारा भरने लगीं। धीरे-धीरे पार्वती जी को नींद आने लगी। उसी समय उस अण्डे में से जीव प्रकट हुआ। श्री पार्वतीजी तब तक हुंकारा देते-देते सो चुकी थीं। अब उनके स्थान पर तोता हुंकारा देने लगा। जब भगवान् शंकर अमर कथा समाप्त कर चुके थे तो श्री पार्वती जी की आंचो भी खुली।

भगवान् श्री शंकर ने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने सम्पूर्ण अमरकथा सुनी है?

श्री पार्वतीजी ने उत्तर दिया कि अमरकथा नहीं सुनी। इस पर भगवान् श्री शंकर ने पूछा- “तब हुंकारा कौन दे रहा था?” पार्वतीजी बोली-मुझे नहीं मालूम।”

तब भगवान् शंकर ने इधर-उधर देखा तो उनको एक तोता दिखाई दिया जो उनके देखते ही देखते गुफा में से निकलकर उड़ गया। भगवान् शंकर उठकर पीछे दौड़े। वह तोता उड़ता तीनों लोकों में गया लेकिन उसको कहीं जगह नहीं मिली। भगवान् शंकर के क्रोधित एवं कठिन स्वरूप को देखकर, उस तोते का मन मृत्यु की आशंका से भर गया। यद्यपि अमरकथा को सुनने के पश्चात् वह अमर हो चुका था, तथापि प्राणरक्षा की आशा से वह इधर-उधर उड़ने लगा। पर भगवान्- शंकर के शत्रु को कौन शरण देता?

श्री व्यासदेव की पत्नी अपने घर के द्वार पर बैठी जम्हाई ले रही थी, बस, तोता उनके पेट में चला गया। उस तोते के बच्चे का पीछा करते-करते, शंकर जी व्यासदेव जी के द्वार तक आ पहुंचे।

भगवान् श्री शंकर ने कहा - ‘व्यास जी, मेरा चोर आपके घर में है। उसे उपस्थित करो।”

महर्षि व्यास बोले-‘प्रभो! हमारे घर में तो कोई चोर नहीं हैं।”

भगवान् श्री शंकर के कहने पर महर्षि व्यास जी ने अपनी पत्नी से पूछा उसने उत्तर दिया - ‘ऐसा जान पड़ता है कि जैसे कि मेरे पेट में कोई पक्षी गया है।”

महर्षि ने यह बात भगवान् श्री शंकर से कही और साथ ही कहा- “आपकी जैसी इच्छा हो वैसा कर सकते हैं। लेकिन यह तो आप जानते ही हैं कि स्त्री को मारना पाप है।”

व्यासजी की पत्नी को मारकर ही तोते को पकड़ा जा सकता था। यदि ऐसा करें तो स्त्री हत्या का दोष बना जाता। इसलिए श्री वेदव्यास की यह बात सुनकर श्री शंकर लौट गये। वह तोता कई वर्षों तक ऋषि-पत्नी के पेट में रहा। लेकिन जब ऋषि-पत्नी के पेट का कष्ट अधिक बढ़ता गया तो श्री वेद व्यास जी पहले ब्रह्माजी के और उसके पश्चात् श्री शंकर के पास गये। इसके पश्चात् चारों श्री वेदव्यासजी के स्थान पर आए और पक्षी

की स्तुति करने लगे। पक्षी, जो भगवान् श्री शंकर जी से अमरकथा सुनकर चारों वेदों तथा अठारह पुराणों का ज्ञानी हो गया था, कहने लगा-“मैं जब तक जगत निर्मोही नहीं होगा, तब तक मैं माँ के पेट से बाहर नहीं निकलूंगा।” इस पर भगवान् विष्णु ने अपनी माया से जगत को निर्मोही कर दिया। इस पर वह तोता बालक रूप होकर माँ के पेट से बाहर आ गया और उसका नाम शुकदेव हुआ। श्री शुकदेव अपने जन्म के साथ ही सबको प्रणाम करके जंगल की ओर चल दिये और फिर भगवान् विष्णु ने अपनी माया हटा दी और जगत पुनः मोहयुक्त हो गया। इस पर श्री वेदव्यासजी अपने पुत्र के लिए व्याकुल होकर श्री शुकदेव के पीछे जंगल में दौड़े और उनके पास पहुंचकर उनसे घर चलने के लिए कहा। श्री शुकदेव जी ने कहा- “जगत निर्मोही है। यहां न कोई किसी का पुत्र है और न कोई किसी का पिता।”

श्री शुकदेवजी ने ध्यान लगा कर देखा तो मालूम हुआ कि भगवान् श्री विष्णु ने उनके साथ छल किया है। इस पर उन्होंने श्री वेदव्यास जी से कहा- “जब तक मैं गुरु धारण नहीं कर लूंगा,

वापिस घर नहीं जाऊंगा और गुरु धारण करने के बाद मैं घर और आपकी सेवा करूंगा।”

अब समस्या यह थी कि शुकदेव किसे गुरु धारण करें?

श्री शुकदेव का महाराज जनक को गुरु धारण करना

शुकदेव जी ने फिर इस संसार में गुरु की खेज में इधर-उधर घूमने लगे। मगर अपने से बढ़कर ज्ञानी उनको कहीं नहीं मिला। इस पर वह श्री वेदव्यास की आज्ञा से महाराज जनक के पास गए। लेकिन महाराज जनक के पास सांसारिक कर्म, स्त्री व राजपाट आदि के कारण उनको ग्लानि हुई। राजा जनक ने जब उनका यह हाल देखा तो अपनी माया से उन्होंने सारे नगर को भस्म कर डाला, राज भवन भी धू-धू करके जलने लगा।

इस पर महारानी और महाराज जनक स्थिर-भाव से शान्त होकर बैठे रहे। राज भवन के जलने से महाराज जनक और

पत्नी का चित्त चालायमान नहीं हुआ, किन्तु श्री शुकदेव जी का चित्त व्याकुल होने लगा। जैसे-जैसे अग्नि की लपटों में घिरने लगे, श्री शुकदेव जी का मन मृत्यु एवं शारीरिक ताप के भय से कांपने लगा।

वास्तव में अमर होने के बाद भी भौतिक-शरीर के प्रति आसाक्ति शेष थी। परन्तु, महाराज जनक आत्मज्ञानी महापुरूष थे। इसीकारण उन्होंने विदेह जनक के नाम से भी जाना जाता है। दूसरी और शुकदेवजी को अमर कथा के सुनने तथा अपने अमर हो जाने का अभिमान था।

उनकी व्याकुलता को देखकर महाराज जनक बोले-“आप क्यों घबरा रहे हैं? आप तो अमर हैं। लेकिन हमारा शरीर अवश्य जलेगा।”

इस पर भी जब श्री शुकदेव जी की व्याकुलता दूर नहीं हुई तो महाराज जनक ने अपनी माया के अग्नि पुनः शान्त कर दी और प्रत्येक वस्तु पूर्ववत् हो गई। यह देखकर श्री शुकदेव जी ने महाराज जनक को अपना गुरु बना लिया और उनसे उपदेश लिया।

इसके बाद श्री शुकदेव जी नैमिषारण्य गये। वहां पर ऋषि-महाऋषियों ने उनका बड़ा आदर-सत्कार किया। ऋषि-महाऋषियों ने आपसे अमरकथा सुनाने के लिए प्रार्थना की। श्री शुकदेव जी बोले इस कथा के सुनने वाले अमर हो जाते हैं। इसके पश्चात् उन्होंने कथा सुनानी आरम्भ की। कथा आरम्भ होने के साथ ही कैलाश पर्वत, क्षीरसागर व ब्रह्मलोक हिलने लगे। ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा सभी देवता उस स्थान पर पहुंचे जहां पर अमर कथा हो रही थी। भगवान् शंकर को स्मरण हुआ कि यदि इस कथा के सुनने वाले अमर हो गए तो पृथ्वी का संचालन बन्द हो जाएगा। और फिर देवताओं की प्रतिष्ठा में अन्तर आ जाएगा। इसलिए, भगवान् श्री शंकर ने क्रोध में भर आये और श्राप दिया कि “जो इस कथा को सुनेगा वह अमर नहीं होगा परन्तु हां वह शिव-लोक अवश्य प्राप्त करेगा।”

माता पार्वती को अमरनाथ सुनाने के लिए, श्रीशंकरजी ने अमरनाथ की गुफा को ही क्यों चुना? इसके पीछे भी एक रहस्य है-

श्री अमरनाथ की गुफा का रहस्य



युगों से पहले, जब पार्वती के मन में यह शंका उत्पन्न हुई कि शंकरजी ने अपने गले में मुण्डमाला क्यों और कब धारण की है, तो शंकर जी ने उत्तर दिया कि - हे पार्वती! जितनी बार तुम्हारा जन्म हुआ उतने ही मुण्ड मैंने धारण कर लिए। इस पर

पार्वती जी बोली कि मेरा शरीर नाशवान है, मृत्यु को प्राप्त होता है, परन्तु आप अमर हैं, इसका कारण बताने की कृपा करें। भगवान श्री शिव ने रहस्यमयी मुस्कान भरकर कहा- यह तो अमरकथा के कारण है। ऐसा सुनकर पार्वती के मन में भी अमरत्व प्राप्त कर लेने की इच्छा जागृत हो उठी और वह अमर कथा सुनाने का आग्रह करने लगी। कितने ही वर्षों तक शिवजी इसको टालने का प्रयत्न करते रहे, परन्तु पार्वती के लगातार हठ के कारण उन्हें अमरकथा को सुनाने के लिए बाध्य होना पड़ा।परन्तु समस्या यह थी कि कोई अन्य जीव उस कथा को न सुने। अतः किसी एकान्त व निर्जन स्थान की खोज करते हुए श्री शंकर जी, पार्वतीजी सहित इन पर्वत मालाओं में पहुँच गए।

प्राचीन-कथा में उल्लेख है कि इस “अमरकथा” को सुनने से पहले भगवान् शंकर यह सुनिश्चित कर लेना चाहते थे कि कथा निर्विघ्न पूरी की जा सके, कोई बाधा न हो तथा पार्वती के अतिरिक्त अन्य कोई प्राणी उसे न सुन सके। उचित एवं निर्जन-स्थान की तलाश करते हुए वे सर्वप्रथम ‘पहलगाम’ पहुँचे, जहाँ उन्होंने अपने नन्दी (बैल) का परित्याग किया। वास्तव में

इस स्थान का प्राचीन नाम बैल-गांव था, जो कालान्तर में बिगड़कर तथा क्षेत्रीय भाषा के उच्चारण-प्रभाव से पहलगांव बन गया।

तत्पश्चात् 'चन्दनबाड़ी' में भगवान् शिव ने अपनी जटा (केशों) से चन्द्रमा को मुक्त किया। 'शेषनाग' नामक झील पर पहुंचकर उन्होंने, अपने गले से 'सर्पों की मालाओं' को भी उतार दिया। सम्भवतः इसी कथा के आधारभूत शेषनाग-पर्वत पर नागों की आकृतियां विद्यमान हैं। हाथी के सिर व सूंडवाले प्रिय-पुत्र, श्री गणेश जी, को भी उन्होंने 'महागुनस-पर्वत' पर छोड़ देने का निश्चय किया। इस स्थान का प्राचीन एवं शुद्ध उच्चारण महा-गणेश था, जो धीरे-धीरे सम्भवतः काश्मीरी भाषा के प्रभाव से महागुनस हो गया। फिर-

'पंचतरनी' नामक स्थान पर पहुंचकर शिव नमें पंच तत्वों (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश) का परित्याग कर दिया। भगवान् शिव इन्हीं पंच-तत्वों के स्वामी माने जाते हैं। जिनको उन्होंने श्री अमरनाथ गुफा में प्रवेश से पहले ही छोड़

दिया। इसके पश्चात् ऐसी मान्यता है कि, शिव-पार्वती ने इस पर्वत-श्रृंखला में ताण्डव-नृत्य किया था। ताण्डव-नृत्य, वास्तव में, सृष्टि के त्याग का प्रतीक माना गया है।

सब कुछ छोड़-छाड़ कर, अन्त में भगवान् शिव ने श्री अमरनाथ की गुफा में पार्वती सहित प्रवेश किया और मृगछाला बिछाकर पार्वती को अमरत्व का रहस्य सुनाने के लिए ध्यानमग्न होकर बैठ गए। लेकिन इससे पहले उन्होंने कालाग्नि नामक रुद्र को प्रकट किया और आज्ञा दी-'चहुं ओर ऐसी प्रचण्ड-अग्नि प्रकट करो, जिसमें समस्त जीवधारी जल कर भस्म हों सकें।' कलाग्नि ने ऐसा ही किया।

.....परन्तु उनकी मृगछाला के नीचे, तोते का एक अण्डा फिर भी बच गया (इसके दो कारण थे- एक तो अण्डा जीवधारियों की श्रेणी में नहीं आता, दूसरे शंकरजी की मृगछाला के नीचे होने के कारण उनकी शरण पा गया।) जिसने अण्डे से बाहर आ कर 'अमरकथा' का किस प्रकार सुन लिया? फिर आगे क्या हुआ? इसी पुस्तक में सम्पूर्ण कथा पीछे दी जा चुकी है।



अमरकथा प्रारम्भ

(यह कथा भगवान् शंकर जी के श्रीमुख से भगवती पार्वती को, पवित्र गुफा में सुनाई गई थी।)

श्री पार्वती जी ने कहा- हे प्रभो! मैं श्री अमरनाथ की यात्रा की महिमा सुनना चाहती हूं जिसके सुनने से जन्म-जन्मान्तर के पाप ताप मिट जाते हैं। हे जगत्-स्वामी! आप श्री अमरनाथ जी के लिंग का महात्म्य तथा मार्ग के तीर्थों का वर्णन कीजिए। श्रीअमरनाथ की यात्रा तथा पूजन की विधि भी कहें और यह भी बतायें कि जो, शास्त्रोक्त यात्रा का त्यागकर, केवल लिंग के ही दर्शन करता है वह किस गति को प्राप्त होता है?

भगवान् श्री शंकर ने कहा- मनुष्य श्री अमरनाथ जी की यात्रा करके शुद्धि को प्राप्त करता है तथा शिवलिंग के दर्शनों से, भीतर-बाहर से शुद्ध होकर-धर्म अर्थ काम वचन तथा मोक्ष को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। वह मनुष्य जो कि मार्ग के तीर्थों पर यथाविधि स्नान-दान इत्यादि न करके सीधा गुफा में पहुंच जाता है, उसकी यात्रा निष्फल समझो।

पुनः भगवान् श्री शंकर बोले- हे देवी! दो प्रकार की यात्रा होती है- 1. अन्तर्मुखी, 2. बहिर्मुखी

यह दोनों प्रकार की यात्रा, धर्म अर्थ काम व मोक्ष के इच्छुकों को करनी चाहिए। पहली वाली ऊपर व दूसरी नीचे की यात्रा है।

ऊर्ध्व (ऊपर) की यात्रा, मोक्ष चाहने वाले योगियों को, प्राणायाम द्वारा होती है। प्राण तथा अपान- वायु के एक होने पर, योग- मार्ग दशम्-द्वार अर्थात् ब्रह्मरन्ध्र में प्राणों को लीन करने से निश्चय ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। अन्तर्मुखी (ऊर्ध्व) यात्रा साधारण-मनुष्य की सामर्थ्य से परे है, क्योंकि सांसारिक सुखोपयोग की लालसा इसमें (निचली) यात्रा, यानी पैदल-यात्रा, से मनुष्यों के सम्पूर्ण पाप दूर होकर चित्त निर्मल हो जाता है। साधारण उत्साह व सामर्थ्य वाले मनुष्यों के लिए इस बहिर्मुखी यात्रा का विधान है, जिससे वह अपनी जीवन में आत्मिक संतोष प्राप्त करे। बहिर्मुखी-यात्रा के निरन्तर अभ्यस्त व्यक्ति ही समय के अंतर से यात्रा की ओर अन्मुख होते हैं तथा विरक्त भाव से संसार के समस्त सुखों को भोग कर अन्त में वह भी मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

अन्तर्मुखी यात्रा की ओर उन्मुख व्यक्ति संसार में बिरले ही मिलते हैं, और इस ओर अग्रसर होते हैं वह बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न होकर निश्चित मोक्ष की प्राप्ति करते हैं, परन्तु बहिर्मुखी यात्रा साधारण मनुष्य को सुलभ है। अतः संसार में अधिक मनुष्यों को अधिकाधिक लाभ प्रदान करने की इच्छा से यहां अमरनाथ की बहुमुखी यात्रा का वर्णन करते हैं।

अमरनाथ यात्रा से सम्पूर्ण लाभ के अभिलाषी व्यक्ति को परम शक्तिशाली परम पूज्य अमरनाथ के प्रति ऋद्धासिक्त होकर भक्ति एवं पूर्ण समर्पण भाव से अपनी यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए। सांसारिक सुखों और शरीरिक-मानसिक कष्टप्रद दुखों के प्रति समान भाव रखते हुए अमरनाथ महादेव का ध्यान, गुणगान और उससे सम्बन्धित वार्तालाप ही करें।

भगवान् शंकर जी ने यात्रा की अवधि के सम्बन्ध में अपना मत प्रकट करते हुए पार्वती को बताया कि हे पार्वती, वैसे तो अमरनाथ यात्री के लिए, मनुष्य के स्थायी निवास से लेकर अमरनाथ शिवलिंग के दर्शन तक के बीच का समय यात्रा-काल कहा जाता है, तो भी सही रूप में श्रीनगर श्री अमरनाथ की गुफा

में शिवलिंग दर्शन तक का यात्राकाल विशेष महत्वपूर्ण है।

इसी तरह हठयोग और राजयोग से, तीर्थ पर किसी अच्छे विद्वान पंडित द्वारा अमरकथा सुनने से पुरुष ज्ञान अधिकारी हो जाता है। इस प्रकार कहे गये के अनुसार-यात्रा करने वाले मुक्ति को प्राप्त करते हैं। अतः पुण्य देने वाली निम्न यात्रा का वर्णन किया जाता है:-

सर्वप्रथम, श्रीनगर में, विघ्नों का नाश करने वाली श्री गणेश जी की पूजा करें। रीति के अनुसार भगवान् श्री शंकर का स्मरण करता हुआ, वहां से बाहर निकल कर षोडश तीर्थ-स्नान तथा आचमन करके शिव की ओर बढ़ें।

हे प्रिये! वहां गंगाजी का दर्शन और प्रणाम करके, भगवान् श्री शंकर का पूजन, देवता और ऋषियों को तर्पण व ब्राह्मणों को भोजन करवायें। फिर अन्न-वस्त्र आदि दान देकर विसर्जन करें। फिर पद्मपुर में, जो सिद्धों का तीर्थ है, वहां पर स्नान करके और दान देकर युवती तथा मिष्टो (मिठव) तीर्थों पर स्नान करके अवन्तीपुर (बांतीपुर) को चलें।

वहां साधु-महात्माओं के क्षेत्र में स्नान करके बहन्नाग (मिहरनाग) जाकर हरीपारा गांव में हरिदाख्य-गणपति, विघ्नों के नाश करने वाले श्री गणेश जी का पूजन करें और देवताओं तथा ऋषियों का तर्पण करें। देवताओं तथा पितरों का तर्पण करने से तथा दान करने से श्री गणेश की कृपा से मनुष्य के समस्त विघ्न तथा पाप नष्ट हो जाते हैं। इसके बाद बलिहार-क्षेत्र (बहियार ग्राम) में स्नान करके आगे बढ़ें।

नागाश्रम (बागहांन में) जिसको हस्तिकर्ण कहते हैं, संगम के समीप जाकर ज्येष्ठाषाढ़ नामक गणस्वामी भगवान् श्री सदाशिव का पूजन करके आगे चलें। तीनों तापों तथा मलों का नाश करने वाले तीर्थ के जल में स्नान व आचमन करके चक्र नामक तीर्थ (चक्रधर) पर जाकर स्नान करके, देवताओं तथा ऋषियों का तर्पण करें। और सोने का चक्र बना कर ब्राह्मण को दान देवें। दान विधिवत् हवन तथा जप करके देवें। फिर विधिवत् हवन तथा जप करके देवकीतीर्थ (देवकियार) की ओर चलें। और फिर वहां स्नान करके हरिशचन्द्र-तीर्थ (विजय-विहार)

श्री सूर्यनारायण का पूजन

बीज-बिहारा पहुंच कर स्नान करें तथा वृषभध्वज महादेवजी का पूजन कर हव्य-कव्य आदि से देवताओं और ऋषियों का तर्पण करें। गऊ, स्वर्ण, तिल और भोजन यथाशक्ति सत्पात्र ब्राह्मण को दान दें। ऐसा करने से मनुष्य को 100 ब्राह्मणों को तृप्त करने के फल की प्राप्ति होती है। हे देवी! इसके पश्चात् भोजन करें और तीर्थ को नमस्कार करके आगे चलें और लम्बोदरी नदी पर आलस्य रहित होकर, स्नान करके, युजवार-ग्राम में भगवान् श्री सदाशिव के दर्शन करें। इसके बाद सूर्य-क्षेत्र (मार्तण्ड भवन) मटन में सूर्य-कुण्ड (सूर्य गंगा) में स्नान करके भगवान् भास्कर का दर्शन करें।

श्री सूर्यनारायण का पूजन संसार के समस्त भोगों तथा मुक्ति देने वाला है। यात्रियों को सूर्य-क्षेत्र में अन्न-वस्त्र आदि का दान ब्राह्मण को देना चाहिए। यह सूर्य-क्षेत्र (मटन) तीर्थ, अपने कर्मों से दुखी हुए पितरों के उद्धार के लिए उत्तम है, ऐसा देवताओं

का, ऋषियों-महर्षियों का मत है। हे देवी! यहां पर पिण्डदान आदि से पितरों का उद्धार करें। दोनों कुण्डों का दर्शन करें और फिर उनमें मत्स्य रूप देवताओं का दर्शन करें और फिर उनको नाना मन्त्रों से तृप्त करें। पश्चिम वाहिनी गंगा में स्नान करके पितरों के उद्धार के लिए श्राद्ध करें।

इसके बाद सत्कार (साकरस) स्थान में पहुंचे, स्नान करें और श्री गणेश का पूजन करें और फिर भद्राश्रम में जायें। फिर परम पवित्रा हयशीर्ष (सिलगाम) टाश्रम में तथा स्त्रश्वतर-क्षेत्र में और गंगाजल में स्नान करके संध्या-वंदन आदि नित्य-क्रिया करें।

सरलक (सलर) ग्राम में पहुंच कर पवित्र अनन्तनाग तालाब के जल में स्नान करें, उत्तम बालखिल्य-आश्रम (खिलन) को जाना चाहिए।

बालखिल्य-तीर्थ का महात्म्य

हे देवी! अब मैं पाप-ताप का हरने वाले चित्त का शुद्ध करने वाले बालखिल्य-तीर्थ का महात्म्य कहता हूं। ध्यानपूर्वक सुनो। पूर्व काल में, ब्रह्मचारी बालखिल्य नाम के महर्षियों ने,

भगवान् की प्रसन्नता के हेतु, कठोर तप किया। कुछ समय बाद पैर के अंगुष्ठ के सहारे खड़े होकर तथा निराहार रहकर, इन्द्री तथा मन की वासनाओं को रोक कर, समाधि में लीन हो गये। फिर विष्णु की प्रसन्नता के लिए मन्त्र-जाप करने लगे। इस समाधि में हजारों वर्ष व्यतीत हो गये। भगवान्-विष्णु उनकी तपस्या से प्रसन्न हो गये और उनको प्रत्यक्ष दर्शन दिया। महर्षियों ने भगवान् विष्णु को को देखा। तदोपरान्त बालखिल्य मुनि ने, समाधि त्याग कर, विष्णु को नमस्कार किया शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी भगवान् विष्णु की भक्ति-युक्ति वाणी से प्रार्थना करने लगे-“प्रभो! आप सर्वव्यापक हैं, सर्व सामर्थ्यवान् हैं। वेद, पुराण को प्रकाश में लाने वाले हैं। संसार के जन्म, मृत्यु तथा पालन पोषण करने वाले हैं। हे प्रभो! हम आपकी शरण में हैं॥”

“तीनों लोकों के स्वामी, लोकपालों के भी पति, देवों के देव, घट-घट में विराजमान प्रभो! हम आपकी शरण में हैं। आपका तेज बहुत ही प्रकाशवान् है। आप माया (प्रकृति)का पर्दा बना कर संसार में नाटक करते हैं। नित्य नवीन रूप दिया करते हैं।

श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि रूप में अवतार लेते हैं तो कभी मोहिनीरूप धर लेते हैं। इस संसार-रूपी नाटक के आप ही सूत्रधार हैं। प्रभो! हम आपकी शरण में हैं। आप आदि, मध्य, अन्त से रहित हैं। आप निगुण भी हैं और सगुण भी हैं, संसार में कोई स्वरूप आप ऐसा नहीं है जिसमें आपका वास न हो। आप वेदान्त के सिद्धान्त से निश्चय होने योग्य तथा योग-शास्त्रानुसार अभ्यास करने योग्य हैं। अतः हे प्रभो! हम आपकी शरण में हैं, हम कृपा करें।” इस प्रकार प्रार्थना कर बालखिल्य-मुनियों को अपने हाथों से उठाया



मटन मंदिर

और गम्भीर वाणी में उनसे बोले-“हे मुनि” मैं आपकी तपस्याओं से प्रसन्न हूँ। जो आपकी इच्छा है, वही वर मागें। मैं आपके अत्यन्त दुर्लभ, देव और दैत्यों से भी दुर्लभ, वर दूंगा।”

बालखिल्य-मुनि बोले-“हे प्रभो! आपके दर्शन से अधिक वर नहीं है, यदि आप हमें वर देना चाहते हैं तो यह वर दें, आप कृपाकरके ऐसा तीर्थ स्थान प्रदान करें, जहाँ हम तपस्या करके सिद्धि प्राप्त कर सकें।” भगवान् विष्णु ने मुनियों के वाक्य सुने, और अपनी



आनन्द-प्रदायनी-दृष्टि से युक्त होकर, अपने चरण के अंगुष्ठ को वहाँ लगाकर, भगवती गंगा का प्रकट कर दिया। गंगा ने पवित्र-आत्मा-मुनियों के आश्रमों को भी पवित्र कर दिया। फिर भगवान्-विष्णु स्वयं भी उस बालखिल्य

नाम के ग्राम में ठहर गये और मुनियों को वर दिया- “श्रेष्ठ मुनियों! यह तुम्हारे नाम पर बालखिल्य तीर्थ होगा और प्रलयकाल तक मनुष्यों को पवित्र करता रहेगा।” श्री कवण्णु वहीं अन्तर्धान हो गये।

बालखिल्य क्षेत्र में, विष्णु के चरण से प्रकट, गंगा विद्यमान है। अतः यह क्षेत्र बालखिल्य मुनियों के नाम से प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र का दूसरा नाम नारायण-तीर्थ है। इस तीर्थ में स्नान करने से महापातक, उपपातक तथा समस्त प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं। नारायण तीर्थ में कलियुग के संकट से भयभीत प्राणियों को स्नान करना चाहिये। इस क्षेत्र में स्नान जप दान करने से जन्म-जन्मान्तर के पाप नष्ट हो जाते हैं।

उस बालखिल्य तीर्थ पर जगद्गुरु सर्वव्यापी नारायण का पूजन करें, जो कि नाना प्रकार के भोगों तथा मोक्ष के प्रदान करने वाले हैं। तीर्थ पर स्नान और यथाशक्ति दान देकर महावन (गणेशबल) (गणेशबल पहलगांव में है) में श्री गणेशजी का पूजन करें। शिवजी बोले- “हे सुन्दरी! श्री गणेशजी को नमस्कार करके लड्डुओं तथा खीर का भोग लगावें।”

मामलेश्वर-तीर्थ की उत्पत्ति की कथा

पाप तथा विघ्नों से रहित होकर मामलेश्वर (मामलेश्वर) क्षेत्र को जावें। हे साध्वे! मामलेश्वर भगवान् के दर्शन या तीर्थ जल में स्नान करके मनुष्य रोगों तथा पापों से छूट जाता है। यहां पर स्नान करने के पश्चात् मनुष्य दान करे तथा ब्राह्मणों को भोजन करवायें।

मामलेश्वर-तीर्थ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कथा सुनाते-

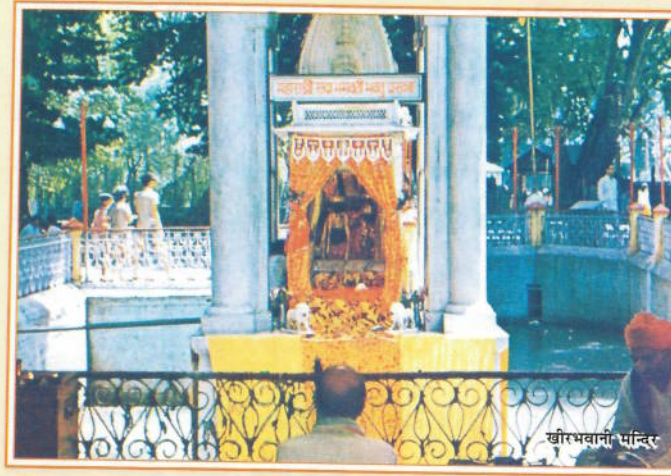
मामलक ग्राम में महागणपति का स्थान है, इसी का मामलेश्वर तीर्थ कहते हैं। पूर्व काल में इसी नाम के भक्त ने यहां पर तपस्या की थी। भगवान् शंकर उस भक्त की तपस्या से प्रसन्न हो गये और अपने ठहरने का स्थान यहां पर ही बना लिया। यहां स्थूलवाट में भगवान्-शिव श्री महागणपति का दो कक्ष्याओं (अर्थात् दोनों ड्योढ़ियों) का द्वारपाल बना कर स्थूलवाट से आगे को चल दिये। भगवान् - शंकर, खिलनक से ऊपर जाकर, दण्डक-मुनि के क्षेत्र में क्षणमात्र के लिए विश्राम करने लग गये। उस समय सभी देवता हर्षयुक्त होकर उस स्थान पर आ गये।

देवताओं को देखकर, भगवान् शिव बड़े ही ऊंचे स्वर से कहने लगे-देवताओं आगे मत बढ़ो, आगे मत बढ़ो।" इस अनादिकाल से वर्तमान श्री महागणपति, अत्यन्त शीघ्रता से पाताल से वहां आये और स्वयं कुल्हाड़ी हाथ में लेकर देवताओं से 'मा, मा' कहने लगे। इस प्रकार सभी देवता उसी शब्द में लीन हो गये।

इस स्थान में देवता लोग सत्-चित अनन्द-स्वरूप परब्रह्म में लीन हो गये, अर्थात् मोक्ष का प्राप्त हो गये। अतः यह स्थान 'मामल' नाम से प्रसिद्ध हो गया।

गणपति से डरे हुए देवताओं को देखकर, भगवान् शिव स्वयं गणपति से बोले, "गणेश! जिस 'मा मा' शब्द का सुनकर आप यहां पर आये हो उसी के अनुरूप तुम यहां पर ही ठहरो और विघ्नों का नाश करते रहो। जो भी मनुष्य यहां आकर तुम्हारी पूजा करेगा वह सर्व प्रकार के विघ्नों से दूर होकर सिद्धि प्राप्त कर लेगा।" यहां पर महागणपति की पूजा करने वाला मनुष्य धन, पुत्र, लोभ, यश, इत्यादि की कामनाओं पर विजय प्राप्त कर लेता है। जो मनुष्य धन, पुत्र, लोभ, यश, मोक्ष इत्यादि की कामनाओं पर

विजय प्राप्त कर लेता है। जो मनुष्य वैशाख-शुक्ला-चतुर्दशी को, उपवास के साथ रात्रि-जागरण, श्री गणेश के सामने करता है, श्री गणेश का पूजन करता है, वह इस संसार में अपनी सभी



कामनाओं की पूर्ति कर लिया करता है और अन्त में मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। गणेश-चतुर्थी का मामेश्वर के समीप श्री गणेश

की पूजा करता है तो वह अनन्त पुण्य प्राप्त कर लेता है। जो श्री गणेश की पूजा कर, मामेश्वर की पूजा करता है, उसका पुनः जन्म नहीं होता है। भगवान् शिव ने गणेश को वर दिया और स्वयं दण्डक-वन में लीन हो गये।

मामेश्वर कुण्ड में स्थान, मामेश्वर-लिंग के दर्शन, गणपति के पूजन-अर्चन के अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है। जिस प्रकार कमल का पता जल में रहकर जल से लिप्त नहीं होता है उसी प्रकार सांसारिक बंधनों में रहकर भी मनुष्य, सुकाम अथवा निष्काम भाव से, मामेश्वर विघ्नराज के दर्शन करके, समस्त-पापों से छूट जाता है। इस मामलेश्वर तीर्थ के महात्म्य के सुनने, पढ़ने तथा कहने से ही मनुष्य समस्त विघ्नों से छूट जाता है।

भृगुपति-तीर्थ

इसके पश्चात् समस्त पापों को मिटाने वाले भृगुपति तीर्थ जाकर वहां विधिवत् स्नान तथा दान करके भगवान् श्री हरि का पूजन करें। भृगुजी ने परिशीलन वन में दीर्घकाल तक बड़ा भारी

तप किया था ऐसा कठिन तप, जो देवता भी न कर सकते थे। इसी बीच में भगवान् श्री विष्णु ने उनके सिर को चूमकर उनको गले लगा लिया।

हे महेश्वरी! भृगु और विष्णु भगवान् ने आपस में आलिंगन किया। उनके शरीर में से पवित्र पसीना निकलकर जिससे वह पवित्र तीर्थ बना। श्री सदाशिव बोले-हे देवी क्योंकि यह तीर्थ भृगु के पसीने से बना है, अतः इसका नाम भृगु तीर्थ प्रसिद्ध हुआ। यहां पर जो मनुष्य स्नान करके तांबे तथा वस्त्र का दान करेगा, उसकी यात्रा निसंदेह सफल होगी। यहां पर स्नान करने से मनुष्य अति उत्तम पुण्य को प्राप्त होता है।

श्री लम्बोदर की कथा

एक बार कैलाश पर्वत पर, भगवान् श्री सदाशिव और श्री पार्वती, ज्ञान-सम्बन्धी बातचीत कर रहे थे। उन्होंने श्री गणेशजी को द्वारपाल बनाकर उनसे कह रखा था कि किसी को अन्दर मत आने देना। इतने में देवराज इन्द्र देवताओं सहित वहां आये।

गणेशजी ने उनको रोका, इस पर दोनों में घामासान युद्ध हुआ। इन्द्र हार गया।

इन्द्र के साथ लड़ने से श्रीगणेशजी को बहुत ज्यादा भूख व प्यास महसूस हुई। चुनांचे अनेक स्वादिष्ट फल खाकर बहुत-गंगाजल पहने से श्रीगणेशजी का पेट बढ़ गया। तब भगवान् श्री सदाशिवजी ने गणेशजी को लम्बोदर के नाम से पुकारने लगे।

हे देवी! भगवान् श्री सदाशिव ने, गंगा का सूखा हुआ देख, श्रीगणेशजी के पेट पर क्रोध में भरकर डमरू से चोट की। फिर गंगा उनके पेट से निकलकर बहने लगी और पौराणिक कथाओं ने उसका नाम लम्बोदरी प्रसिद्ध किया।

हे प्रिये! लम्बोदरी-नदी के जल का स्पर्श कोटि-जन्मों के पापों का नाश करता है इसलिए मामलेश्वर के पास इस नदी का स्पर्श करना आवश्यक है। इसके पश्चात् रन्जिवन में गोलाकार-पत्थर की देव-मूर्ति का दर्शन करें और वहां से सीताराम-कुण्ड में स्नान करके आगे बढ़ें।



चन्दनवाड़ी का सुन्दर दृश्य

रम्जनोपल की कथा

श्री शुकदेव जी, भगवान शंकर की पार्वती को सुनाई गई अमरकथा को, संत-समाज में बैठे सुना रहे थे और सभी जब बड़े ही शांत भव से तथा उत्सुकतापूर्वक कथा श्रवण कर रहे थे।

लम्बोदर जी की कथा कहने के बाद श्री शुकदेव जी बोले कि भगवान शंकर माता पार्वती से कहने लगे कि हे प्रिये! मार्ग में आने वाले इस रम्नोपल की कथा अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

हे पार्वती! एक समय सीता, लक्ष्मण तथा राम ने विचरते-विचरते, रम्ज्न्ध्य-पवित्र-वन में बाकर मदयुक्त राक्षसों को देखा। क्रोधवश उनको पसीना आ गया। यह पसीना कुण्डों में पड़ने से यह कुण्ड परम-पवित्र हो गये। इसके पश्चात् भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज, पाषाण पर चढ़कर, बाणों से राक्षसों को समाप्त करने लगे। बहुत से राक्षस मारे गये और बाकी के इधर-उधर भाग गये। उन राक्षसों का खून गिरने से वह गंडशैल (छोटी-पहाड़ी) रंगीन हो गई और भगवान् श्री रामचन्द्र जी महाराज के चरण-स्पर्श से दूसरों को पवित्र करने वाली हो गयी।

इस रम्नोपल के दर्शन से मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है और कुण्ड में स्नान करने से मोक्ष का अधिकारी बनता है।

स्थानु-आश्रम (चन्दनवाड़ी)

इसके बाद नील-गंगा में स्नान करें, प्रसन्नचित हो, स्थानु-आश्रम (चन्दनवाड़ी) की यात्रा करें।

हे देवी! एक बार काम-क्रीड़ा तथा खेल की बातों में भगवान् श्री सदाशिव का मुख श्री पार्वती के नेत्रों के साथ लग गया। हे सुन्दरी! तब उनका मुख अंजन (सुरमे) के कारण काला हो गया।

फिर भगवान् श्री सदाशिव जी ने सुरमे से काला हुआ देखकर मुख को श्री गंगाजी में धोया, जिससे गंगाजी का रंग काला पड़ गया। अतः गंगा का नाम नील गंगा हो गया। यह नदी महापापों



को नष्ट करने वाली हैं।

नील-गंगा का स्पर्श, दुष्ट-मनुष्यों के साथ रहकर जो दोष प्राप्त हुए हों, उन्हें तथा स्त्रियों के मन के विकारों का नाश करता है, इसमें रत्ती भर भी संदेह नहीं है। यह नील-गंगा पहलगवां से 6.5 मील दूर चन्दनवाड़ी के मार्ग में है। पूर्वकाल में भगवान् श्री सदाशिव दक्षप्रजापति की पुत्री सती का वियोग हो जाने पर हिमालय में कठिन-तप करने लगे। महेश्वरी फिर वहां पर बहुत वर्षों तक तप करती रही।

सती ने पर्वतराज के यहां जन्म लेकर पार्वती का रूप पाया। यहां तपस्या करने के पश्चात् भगवान् सदाशिव की सेवा करने लगीं। लेकिन उनकी सेवा करने के बाद भी भगवान् श्री सदाशिव की समाधि न खुलने पाई। तब श्री पार्वती जी चन्दन-वाटिका में बड़ी घबराई। जिस वाटिका को नाम बाद में महापाप विनाशक प्रसिद्ध हुआ। हे देवी! इस स्थान-आश्रम (चन्दनवाड़ी) के पास जो स्नान करता है वह शिवधाम को प्राप्त होता है।

ब्रह्म-हत्या तथा गौ-हत्या आदि महापाप करने वाला मनुष्य भी चन्दनवाड़ी में स्नान करे तो समस्त पापों से छूट जाता है।

सरस्वती नदी का दर्शन करने से एवं उसमें स्नान करने



से, मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। इसके पश्चात् यात्री को पौषाख्य-पर्वत (पिस्सू घाटी) पर चढ़ना चाहिए।

पिस्सू घाटी

श्री शुकदेव जी कहने लगे- प्राचीनकाल में, भगवान् शंकर इस पिस्सू घाटी के एक उच्च शिखर पर विराजमान थे। एक बार देवता और राक्षस, भगवान् श्री सदाशिव के दर्शनों के लिए आए। वह पहाड़ पर चढ़ते समय, ईर्ष्या में ग्रस्त होकर कहने लगे कि हम पहले चढ़ेंगे। दोनों में युद्ध होने लगा। राक्षसों से देवताओं ने एकाग्रचित्त होकर भगवान् श्री सदाशिव का ध्यान किया।

प्रिये भगवान् श्री सदाशिव जी की कृपा से देवताओं ने राक्षसों को मार-मार कर चूर्ण कर दिया। जिस स्थान पर देवताओं ने राक्षसों का चूर्ण बनाया, वहां पर उनकी अस्थियों का एक बहुत बड़ा ढेर लग गया। राक्षसों की हड्डियों के पीसे जाने के कारण ही घाटी का नाम पिस्सू-घाटी पड़ गया। यह पर्वत यानि पिस्सू घाटी, अब भी शिव भक्तों के पाप ताप हरता है। हे देवी! 'श्री-८ शितीखण्ड' इस मन्त्र को स्मरणकरता हुआ जो इस पहाड़ पर चढ़ता है उसको ब्रह्मलोक प्राप्त होगा। वह ब्रह्मलोक, जहां पर

कि पाप ताप व शोक का नाम तक भी नहीं है।

इस पिस्सु-घाटी पर श्री शेषनाग का दर्शन कर, विधिवत् पूजन करके आगे बढ़े। वहां पर वायुवर्जन में पत्थरों से छोटी मेढ़ी बनाकर भगवान् श्री अमरेश्वर का स्मरण करें।

प्राचीन-काल में इस पहाड़ पर एक बड़ा ही बलवान् राक्षस, वायु के समान रूप वाला रहता था और यहां आने वाले देवताओं को बड़ा कष्ट पहुंचाता था। देवता भगवान् श्री सदाशिव जी महाराज के पास गये। स्तुति के पश्चात् भगवान् श्री सदाशिव प्रसन्न हुए। देवताओं ने क्षीरसागर के तट जाकर भगवान् श्री

विष्णु की स्तुति की। भगवान् श्री विष्णु देवताओं की स्तुति से प्रसन्न होकर बोले- मैं अभी-अभी वायु दैत्य को नष्ट किये देता हूँ। तुम लोग स्वर्ग लोक जाओ। शेषनाग जी पाताल से प्रकट हुए,



उस पर भगवान् विष्णु सवार हुए और आज्ञा दी- हे सर्पराज! तुम सहस्र-मुखों से वायु का पान करो। अपने प्राणों को वायु द्वारा तृप्त करो, क्योंकि तुम वायु के खाने वाले हो। भगवान् अमृतरूपी वचन सुनकर एक क्षण में शेषनाग ने देखते ही देखते वायुरूपी दैत्य को भष्म कर लिया।

हे देवी! उस दिन से यह पर्वत शेषनाग के नाम से प्रसिद्ध है तथा योगीजन इसको अपना आश्रम भी कहते हैं। इसके दर्शन करने से, तालाब में स्नान से और यहां पर जप, हवन, स्तुति एवं स्वाध्याय करने से, मनुष्य अनन्त-पुण्य प्राप्त होता है।

वायुवर्जन तीर्थ

जब देवताओं ने राक्षसों को मार डाला तब उनमें से प्रष्टता नामक दैत्य वायु में मिलकर देवताओं को कष्ट देने लगा।

इस पर समस्त देवता भगवान् श्रीर सदाशिव जी महाराज ने प्रसन्न होकर कहा- हे देवताओं! तुम लोग यहां मढ़िएं बनाकर शान्तिपूर्वक रहने लगे। लेकिन एक बार दैत्य ने अपना उग्र-रूप दिखाया। जब देवराज इन्द्र ने अपना वज्र उठाया और उसी जगह राक्षस को मार डाला। तब से यह जगह वायुवर्जन, देवताओं से पूजित-तीर्थ प्रसिद्ध हुआ।

आज तक भी, श्री शंकरजी के श्रद्धालु भक्त, यहां पर अपने पूज्य देवों के लिए मढ़ियों की रचना करके, उनके प्रति अपनी भक्ति भवना प्रदर्शित करते हैं। यहां

पत्थरों द्वारा देवताओं के लिए छोटे-छोटे घर बनाने तथा तीर्थ के दर्शन से मनुष्य अत्यन्त पुण्य को प्राप्त होता है। ब्रह्महत्या और



गौहत्या से युक्त मनुष्य भी, इस तीर्थ के दर्शनों से, इनपापों से छूट जाता है।

हत्यारा-तालाब

हे देवी! जिस कारण यह तालाब (हत्यारा तालाब) सूख गया है, वह सुनो! इसके सुनने से प्राणी संशय-से-रहित हो जाता है।

जब भगवान् श्रीसदाशिव जी महाराज तथा देवराज इन्द्र ने राक्षसों को नष्ट किया तो कुछ राक्षस भागकर तालाब में छिप गए। फिर वह थोड़े समय के पश्चात्, देवताओं को पूर्ववत् दुख देने लगे। भगवती पार्वती और सदाशिव जी महाराज से देवताओं के दुख दूर करने के लिए कहा। भगवान् श्री सदाशिव महाराज ने हुंकार किया, जिससे वह डर कर इस तालाब में छुप गए। फिर भगवान् श्री सदाशिव महाराज ने श्राप दिया। वह तालाब सूख गया और राक्षस पकड़े गए। इस स्थान पर यात्रियों को मौन होकर यात्रा करनी चाहिए।

हे, सुन्दरी! इसके बाद पंचतपिणी (पंचतरनी) के पंचप्रवाहों में स्नान करें और देवता ऋषि तथा पितरों का तर्पण सावधान होकर करें।

पंचतरनी गंगा

पूर्वकाल में एक बार भगवान् श्री सदाशिव महाराज ताण्डव नृत्य कर रहे थे। नृत्य करते समय उनका जटाजूट ढीला हो गया और उसमें पंचतरणी गंगा बह निकली, जो महापापों को दूर करने वाली है।

जो मनुष्य आलस्य-रहित होकर इसपंचतरनी-नदी में स्नान करता है वह ब्रह्महत्या आदि घोर पापों से मुक्त हो जाता है। यहाँ पर स्नान करने वालों को वही फल मिलता है जो कुरुक्षेत्र, प्रयाग, नैमिशारण्य में स्नान तथा दान करने से प्राप्त होता है।

हे सुन्दरी! यदि इस तीर्थ पर गऊ, वस्त्र, चन्दन, केसर, अगर, कस्तुरी आदि ब्राह्मण को दान दिए जायें तो यात्री को शिवधाम की प्राप्ति होती है। इसके पश्चात् ऊंची चोटी वाले पहाड़ पर चढ़कर डमारक देवता के दर्शन करने चाहिए।

डमारक देवता की कथा

बड़े से बड़ा पापी भी डमारक देवता के दर्शन करने से पापों से छूट जाता है। हे देवी! अधिक क्या कहूँ? बस इतना कहना ही पर्याप्त है कि यात्री डमारक देवता की पूजा तथा परिक्रमा करने से ही श्रीअमरनाथ के दर्शन योग्य होता है।

एक बार भगवान् श्रीसदाशिव जी महाराज नृत्य में इतने लीन हो गए कि उनका संध्या-समय भी व्यतीत हो गया। इससे इनको बड़ी चिन्ता हुई। वास्तव में भगवान् श्रीसदाशिव जी महाराज श्री कार्तिकस्वामी के साथ क्रीड़ा कर रहे थे कि सूचित करने के लिए नियुक्त महाडमारक नामक गण को निद्रा आ गई और भगवान् सदाशिवजी महाराज का संध्याकाल व्यतीत हो गया। इससे भगवान् श्री सदाशिव जी महाराज के क्रोध का कोई पारावार न रहा और उन्होंने उक्त गण को शाप दिया कि वह शिला रूप होकर देर तक वहाँ ठहरे। वह गण कांपता हुआ भगवान् श्री सदाशिव जी की सेवा में उपस्थित हुआ। भगवान् ने उसको क्षमा नहीं दिया, लेकिन यह जरूर कहा कि जो यहां पर मेरे (अमरनाथ

जी के) दर्शन के लिए आएगा, वह पहले तुम्हारी पूजा तथा परिक्रमा करेगा।

हे देवी! उसी दिन से महाडमारक-गण रत्न नामक शिखर पर, पाषाण रूप में होकर रहता था। भगवान् श्री सदाशिव जी द्वारा दिए गए वरदान के अनुसार, जो मनुष्य उसका पूजन करता है, वह शिवधाम को प्राप्त होता है।

यात्री को चाहिए कि श्रावणी के दिन प्रातःकाल, भैरोंघाटी की यात्रा करते हुए, चोटी पर डमारक की शरण में पहुंचे। डमारेश्वर-भैरव का दर्शन और भक्ति सहित पूजन कर, व्रत की जोत जलाये। फिर मालपूआं तथा लड्डुओं का भोग लगायें।

गर्भ-योनि की महिमा

परिक्रमा और प्रणाम कर, पहाड़ से उतरते समय, मध्य में चलते हुए मार्ग में जो गर्भ-योनि है, उसमें प्रवेश करें। क्योंकि, इसमें एक बार जाने से फिर मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं होता।



अमरनाथ यात्रा के पथ पर

गर्भ-यानि से निकल कर अमरावती नदी में प्रवेश करें। अमरावती के दर्शन मात्र से मनुष्य देवता तुल्य हो जाता है। इस नदी के अमृत सम्मान जल में स्नान करके यात्री को चाहिए कि भस्म को अपनी शरीर पर मले।

हे देवी! जो मनुष्य, पवित्र गर्भ-यानि में से निकलकर, अमर-गुफा को जाता है, उसका पुनर्जन्म नहीं होता है और फिर वह शवरूप हो जाता है। देवी! यह बात बिल्कुल सत्य है।

हे ईशनि! जब भगवान् श्री सदाशिव जी महाराज कैलाश

पर्वत पर नृत्य कर रहे थे, उस समय नन्दी उसकी आज्ञानुसार द्वारपाल था। जब देवता भगवान् श्री सदाशिव जी महाराज के दर्शन के लिए आए तो नन्दी ने उनको रोका। अब देवताओं तथा नन्दी में परस्पर युद्ध होने लगा। नन्दी ने भगवान् श्री सदाशिव जी महाराज से शिकायत की।

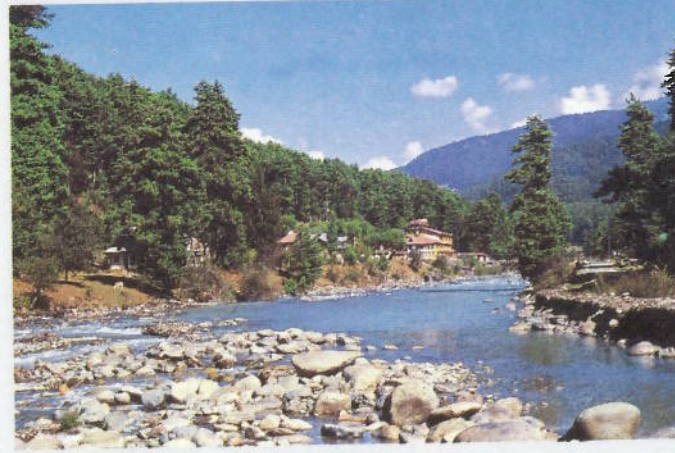
भगवान् श्री सदाशिवजी महाराज ने नन्दी से कहा- तुम दण्ड धारण करो। देवता तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेंगे। तुम द्वार पर चलो और दीवार बनकर मार्ग में गर्भ-योनि को रख दो। देवता उसमें प्रवेश नहीं कर सकेंगे।

भगवान् श्री सदाशिव जी महाराज की बात सुनकर नन्दी ने, गर्भगृह के आगे, एक बहुत बड़ा पत्थर रख दिया, जिसमें कि योनि-सदृश छिद्र था। देवता उस पत्थर को पार कर सके। तभी से इसका नाम गर्भ-योनि प्रसिद्ध हो गया।

हे प्रिये! जो पुरुष जन्मजन्मान्तर के पापों से मुक्त होना चाहे, वह गर्भ-योनि में से निकल कर श्री अमरावती नदी में स्नान कर उसी की भस्मरूप कीचड़ को शरीर पर मलकर उनसे सफेद होकर थोड़े-वस्त्र, कोपीन और रेशमी धोती को पहने। फिर,

‘सन्मार्ग प्रदान करो!’ कहते हुए तथा ‘शिव-शिव’ का उच्चारण करते हुए, क्रोध-मोह आदि का त्याग कर पहाड़ पर चढ़ें! मनुष्य, गुफा में स्थित अमरेश्वर-भगवान् (देवताओं के देव भगवान्) को नमस्कार करें और प्रभु के चरणों में मन लगाकर भक्ति के साथ इस तरह स्तुति करें-

दयां कुरु हे दयासागर हर हर शिव शंकर शम्भो।
 दयां कुरु हे दयासागर हर हर शिव शंकर शम्भो।
 संकटभूधभेदनिमदन शशिधशेखर नरकारे।
 भवसागर तारक हे त्रयम्बक! भभहरशंकर शम्भो॥
 वाह्याभ्यन्तरदोषाणां क्षये तद्दर्शन नृणाम्।
 दर्शनात्स्पर्शनाच्च पूजनाच्चपिबन्धनात्॥
 अमरेशस्य तल्लिङ्ग सत्यं नैवात्र संशयः।
 महापापकयुक्तनी युक्तानुपपातकैः॥
 सर्वपापहं नान्यत्सुलभं देस्तरे कलौ।
 स्नानानीत्यं वितस्तयांष्ट्रप्रोक्तानिपथीन्तरे॥
 त्रिंशदन्यत्र यात्रायाममरेश्वरदर्शने।



लिददर घाटी-पहलगाम

षट्त्रिंशत्तत्त्वरूपाणां क्षेत्राणां परतः स्थितः॥
 इत्थं सम्पाप्ये शुद्ध शिवधामामृतेश्वरः।
 एवं कृत्वा नरो यात्रां पश्येद् लिंग रसात्मकम्॥
 सयाति शिवसायुज्यं यतो भूयो न जायते॥

सुधालिंग के दर्शनों से मनुष्य के बाहर व भीतर का मैल

नष्ट होकर वह शुद्ध तथा पवित्र हो जाता है। अमृत से बने हुए सुधालिंग के दर्शनों एवं स्पर्श-पूजन तथा वदन से, महापापी मनुष्य भी समस्त पापों से छूट जाता है। कलयुग में मुक्ति का इससे बढ़ कर दूसरा साधन बिल्कुल नहीं है। वितस्ता (जेहलम-नदी) में 6 स्नान और श्री अमरनाथ जी की यात्रा में 30 स्नान हैं। इसके अलावा यहां पर देवताओं के 36 स्थान हैं। उन देवस्थानों के दर्शन करने से मनुष्य को शिवधाम की प्राप्ति होती है। इस प्रकार यदि मनुष्य यात्रा करता हुए रसात्मक-लिंग के दर्शन करे तो मोक्ष को प्राप्त होता है। जिससे कि इसको बार-बार जन्म-मरण को दुःख नहीं भोगना पड़ता।

श्री अमरेश महादेव की कथा

श्री पार्वती जी बोली-प्रभो! अब अमरेश-महादेव की कथा सुनना चाहती हूं और यह जानना चाहती हूं कि महादेव गुफा में स्थित होकर अमरेश क्यों कर या कैसे कहलाये?

भगवान् श्री सदाशिव जी महाराज ने उत्तर दिया- हे देवी!

सुनो, मैं अब विस्तार पूर्वक कहता हूं। इसके सुनने से मनुष्य करोड़ों पापों से छूट जाता है।

आदिकाल में ब्रह्मा, प्रकृति, अंहकार, स्थावर (पर्वतादि), जंगल (मनुष्य), संसार की उत्पत्ति हुई। इसके पश्चात् क्रमानुसार देवता, ऋषि, पितर, गन्धर्व, राक्षस, सर्प, यक्ष, भूतगण, कुष्माण्ड, भैरव, गीदड़, दानव आदि की उत्पत्ति हुई।

इस प्रकार नए भूतों की सृष्टि हुई परन्तु इन्द्रादि देवता सहित सभी जीव मृत्यु के वश में हुए थे। देवता भगवान् श्री सदाशिवजी महाराज के पास गए और उनकी स्तुति की। देवताओं ने कहा कि हमको मृत्यु बाधा करती है। आप कृप्या कोई ऐसा उपाय बतलायें जिससे कि मृत्यु हम लोगों को बाधा न करे।

भगवान् श्री सदाशिव जी महाराज ने देवताओं की बात सुनकर कहा—“आप लोगों की मृत्यु के भय से रक्षा मैं करूंगा।” भगवान् श्री सदाशिव ने इस तरह कहकर अपने सिर पर से चन्द्रमा की कला को उतार कर निचोड़ा और देवताओं से कहा—“यह आप लोगों के मृत्यु रोग की औषधि है।”

हे देवी! इस चन्द्रकला के निचोड़ने से पवित्र अमृत की धारा बह निकली। वास्तव में वह धारा अमरावती नदी है। प्रिये जो अमृत के बिन्दु चन्द्रकला के निचोड़ते समय भगवान् श्री सदाशिव



जी महाराज के शरीर पर पड़े थे। वह सूख गए और पृथ्वी पर गिर पड़े। गुफा में जो भस्म है, वह अमृत-बिन्दु के कण हैं, जो भगवान् जी के चन्द्रकला के निचोड़ने से शरीर पर और बाद में पृथ्वी पर गिरे थे।

हे देवी! भगवान् श्री सदाशिव जी महाराज देवताओं को प्रेम दिखाते हुए द्रवीभूत हो गए। देवता भगवान् श्री सदाशिव जी महाराज को जल-स्वरूप देखकर स्तुति करने लगे और बार-बार नत-मस्तक होकर नमस्कार करने लगे। जब भगवान् श्री सदाशिव जी महाराज ने पुनः, भाव-विभोर होकर यथार्थ-स्वरूप उनको दिखाया।

इसी कारण प्रत्येक पक्ष में अमृत पिघलता और जमता है। हे देवी! यह रस (द्रवीभूत) कठिन होकर लिंग रूप में परिवर्तित हो गया। लिंगरूप भगवान् श्री सदाशिव जी महाराज को फिर मूलरूप हुआ देखकर देवता उनको बारम्बार नमस्कार करने लगे। भगवान् श्री सदाशिव ने बड़ी दयायुक्त वाणी से देवताओं से कहा- “हे देवताओं! तुमने मेरा बर्फ का लिंग-शरीर इस गुफा में देखा है। इस कारण मेरी कृपा से आप लोगों को मृत्यु का भय नहीं रहेगा। अब तुम यही पर अमर होकर शिव रूप को प्राप्त हो जाओ। आज से मेरा यह अनादिलिंग-शरीर तीनों लोकों में अमरेश के नाम से विख्यात होगा।”



देवता इस अमरेश्वर-महाराज के लिंग-शरीर को नमस्कार और परीक्रमा करके, अपनक अपने स्थान को चले गये। परन्तु सत्य रूप में गुफा में भी रहे।

हे देवी! भगवान् सदाशिव देवताओं को ऐसा वर देकर उस दिन से लीन होकर गुफा में रहने लगे। भगवान् श्री सदाशिव जी महाराज ने, अमृत-रूप सोमकला को धारण करके, देवताओं की मृत्यु का नाश किया, इसलिए उनका नाम अमरेश्वर प्रसिद्ध हुआ।

हे महेश्वरी! गर्भपात करने वाला, गुरु की शैया पर आरुढ़ होने वाला, मदिरापान करने वाला, स्वर्ण चुराने वाला, गऊ

हत्या करने वाला, ब्रह्महत्या आदि करने वाला भी यदि श्री अमरनाथ जी के रसमय लिंग शरीर का दर्शन करे तो वह उसी क्षण समस्त पापों से मुक्त हो जाता है।

भगवती पार्वती ने भगवान् श्री सदाशिव जी से पूछा- प्रभो! कौन से शिवगण कबूतर हुए हैं और कहां पर स्थित हैं? कृपया यह सब मुझे विस्तार पूर्वक बतलाइये।

भगवान् श्री सदाशिव बोले-एक समय भगवान् महादेव संध्या समय नृत्य कर रहे थे कि यह गण आपस में ईर्ष्या के कारण 'कुरु-कुरु' शब्द करने लगे। महादेव जी ने क्रोधित होकर उनको यह श्राप दिया कि तुम दीर्घकाल तक यही शब्द (कुरु-कुरु) करते रहो। चुनांचे वह रुढ़-रूपी-गण उसी समय कबूतर हो गये। इनके दर्शनों से समस्त पाप दूर हो जाते हैं।

श्री अमरनाथ जी को गुफा में कबूतरों को देखकर जो भक्तगण 'जय' शब्द का उच्चारण करते हैं, वे स्वयं ही शिव स्वरूप हो जाते हैं।

यात्रा का महात्म्य

भगवती श्री पार्वती ने भगवान् श्रीसदाशिव जी महाराज से पूछा-प्रभो किस समय की यात्रा महाफल देने वाली है? श्री अमरनाथ जी के दर्शन व पूजन से क्या फल प्राप्त होता है? इसके अतिरिक्त यह भी बताइये कि बड़े से पापी किस वस्तु का दान करे, जिससे कि उसके समस्त पाप नष्ट हो जायें?

हे देवी! श्रावणी पर यात्रा करनी बड़े भारी पुण्य को देने वाली है। क्योंकि भगवान् श्री सदाशिव जी महाराज से दस गुणा, प्रयाग से सौ गुणा, नैमिषारण्य तथा कुरुक्षेत्र से हजार गुणा अधिक पुण्य देने वाला श्री अमरनाथ जी का पूजन है। जो कि मैंने तुम्हारे हित के लिए कहा है। देवताओं की हजार वर्ष तक सोने, फूल, मोती और पट्ट-वस्त्रों से पूजा का जो फल मिलता है, वह श्री अमरनाथ की रसलिंग-पूजा से एक ही दिन में प्राप्त होता है।

कस्तूरी, कपूर, चन्दन, केसर, मोती, सोना, चांदी, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और अनेक प्रकार की सामग्री से जो मनुष्य भगवान् श्रीअमरनाथ जी का पूजन करता है, उसको बड़ा भारी

फल मिलता है। भगवान् श्री अमरनाथ जी की आरती और परिक्रमा से भी बहुत पुण्य प्राप्त होता है। श्री अमरनाथ जी का दर्शन व स्पर्श करके, पंचतरंगिनी के उत्तर संगम में जाकर, देव व पितृ-प्रसन्नार्थ श्राद्ध करें।

लौटने पर यात्रियों को मामलाख्य महाग्राम में जाकर श्रीगणेशजी का पूजन करना चाहिए और वहां गंगा के तट पर खड़ी भगवती जी से, जो भगवान् श्री सदाशिव जी महाराज के सिर पर स्थित हैं, अपनी यात्रा के सफल होने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। पाताल-गंगा में स्नान करके यात्रियों को अपने-अपने घरों को वापस जाना चाहिए।

-: इति श्री अमरेश्वरमहादेव वर्णित अमरकथा :-



श्री वैष्णो देवी की गुफा

‘मुंह मांगी मुरादे’ देने वाली माता वैष्णों देवी जम्मू काश्मीर राज्य में त्रिकूट-पर्वत की सुन्दर गुफा के भीतर तीन भव्य-पिण्डियों के रूप में विराजमान हैं, जहां लाखों की संख्या में दर्शन करके यात्री मनोकामना पूर्ण करते हैं। पूरे वर्ष भर यहां श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। पैदल यात्रा का प्रारम्भ कटरा नामक स्थान से होता है।

मार्ग-परिचय : श्रीनगर से कटरा के लिए प्रातःकालीन सीधी बस सेवायें उपलब्ध हैं। अन्यथा काश्मीर से किसी भी भाग से लौटते हुए यात्री ऊधमपुर से कटरा केवल डेढ़ घण्टे में पहुंच जाते हैं। पठानकोट के मार्ग से आने वालों के लिए जम्मू लगभग 3 घण्टे का बस-मार्ग है, रेल भी जम्मू तक आती है। जम्मू से यात्री बस द्वारा केवल 2 घण्टे में कटरा पहुंच जाते हैं। जम्मू से कटरा 52 किलोमीटर। कटरा से 15 किलोमीटर पैदल चढ़ाई प्रारम्भ होती है, जिसे साधारण व स्वस्थ यात्री 4 घण्टे में चढ़ पाते हैं। जो यात्री पैदल जाने में असमर्थ हों, उनके लिए कटरा में ही घोड़ा-खच्चर आदि सुविधा से उचित मूल्य पर मिलते हैं। वैष्णों देवी जाने वाले प्रत्येक यात्री के लिए कटरा से यात्रा-पर्ची प्राप्त करना अनिवार्य है। यह पर्ची कटरा बस स्टैंड पर स्थित टूरिस्ट सेन्टर से निःशुल्क दी जाती है।

यात्रा के मुख्य स्थान: पहला दर्शन कौल-कन्धौली नगरकोटा (जम्मू से 12 कि.मी.) नामक स्थान पर है। दूजा दर्शन देवामाई। इसके बाद कटरा से क्रमशः भूमिका मन्दिर, बाण गंगा मन्दिर, चरण पादुका, आदि कुमारी, हाथी-मत्था, सांक्षी छत होते

हुए यात्री वैष्णों देवी दरबार पहुंच जाते हैं। भैरों मन्दिर दर्शन वापसी में किये जाते हैं।

कटरा से माता वैष्णों देवी: कटरा में एक लम्बा बाजार है, जहां खाने-पीने के लिए होटल ढाबे इत्यादि बने हैं। ठहरने के लिए टूरिस्ट सेन्टर, डाक बंगला, होटलों के अतिरिक्त कई धर्मशालायें भी हैं। यात्रा-पर्ची, पूजा-सामग्री, देवी की भेंट (नारियल) छड़ इत्यादि लेकर कटरा से पैदल यात्रा के लिए प्रस्थान करते हैं। दर्शनी-दरवाजा नामक स्थान से होते हुए कटरा से लगभग ढाई किलोमीटर की दूरी पर वैष्णों देवी यात्रा का प्रथम पड़ाव बाणगंगा आता है। त्रिकूट पर्वत के चरणों में स्थित शीतल जलधारा में कई यात्री स्नान करते हैं। मन्दिर व कुछ दुकानें भी यहां हैं। समुद्रतल से लगभग 2800 फीट। यात्रा का दूसरा पड़ाव है-चरण पादुका, जो समुद्रतल से 3380 फीट है। इसके बाद लगभग 4.5 किलोमीटर दूर आदिकुमारी (4800) फीट स्थान है। आदिकुमारी में गर्भूजन गुफा दर्शनीय है। इसके आगे सीधी लगातार एवं दुर्गम चढ़ाई शुरू हो जाती है। माता के दिव्य दर्शन

प्राप्त करने की लालसा में श्रद्धालु 'जय माता दी' बोलते हुए आगे बढ़ते हैं। यहां से प्रारम्भ हुई चढ़ाई को हाथी मत्था की चढ़ाई को हाथी मत्था की चढ़ाई भी कहते हैं। इसकी ऊंचाई समुद्रतल से 6700 फीट है और आदिकुमारी से 2.5 किलोमीटर है।

हाथी-मत्था की चढ़ाई के बाद यात्री सांझी-छत पहुंच जाते हैं। यहां से माता के दरबार तक केवल सीधा और उतराई का मार्ग है। दरबार में जलपान और आवास की सभी सुविधायें हैं। इसके अतिरिक्त प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, पोस्ट ऑफिस, टेलिफोन व्यवस्था एवं पुलिस सहायता भी उपलब्ध है। यात्रियों की सुविधा के लिए यहां कम्बल, दरी, खाना बनाने के बर्तन एवं स्टोव भी मिल सकते हैं। खाने पीने की दुकानें चौबीसों घण्टे खुली रहती हैं। पूजन-सामग्री एवं भेंटें भी उपलब्ध हैं। पवित्र गुफा के सामने श्रद्धालु क्रमसंख्या के अनुसार माता के दर्शन के लिए पंक्तिबद्ध होकर प्रतीक्षा करते हैं। पवित्र गुफा में प्रवेश से पूर्व स्नान करना जरूरी है। इसके लिए पवित्र गुफा में से आने वाली गंगा की जलधारा का प्रवाह होता है।

पवित्र गुफा में दर्शन

माता वैष्णों देवी की पवित्र गुफा का प्रवेश-द्वार संकरा या तंग है। इसलिये इसमें काफी लेटकर या झुककर आगे बढ़ना पड़ता है। गुफा के अन्दर टखनों की ऊंचाई तक शुद्ध और शीतल जलप्रवाहित होता है जिसे चरण गंगा कहते हैं। पूरी गुफा 18 मीटर लम्बी है। इसमें कोई भी सुविधानुसार खड़ा नहीं हो सकता है। इसके प्रवेश-द्वार पर एक बड़ा पत्थर है जिसे भैरों का धड़ कहते हैं। उसी के ऊपर से लेटकर गुफा में प्रवेश किया जा सकता है। गुफा के अन्त में महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती तीन पिण्डियों के रूप में विराजमान हैं, जिनकी पूजा श्रद्धालु करते हैं। कुछ लोग मध्यवाली पिण्डी को वैष्णों मानते हैं। अन्य कुछ भक्त तीनों पिण्डियों के संयुक्त स्वरूप को ही माता वैष्णों देवी कहते हैं।

चरणगंगा के पावन और शीतल जल से पवित्र हुए चरणों से आगे बढ़ते हुए यात्री उस स्थान पर पहुंचते हैं, जहां अब नई गुफा बनी है। गुफा के अन्दर ताजी हवा का संचार हो जाने के कारण अब किसी भी यात्री को सांस लेने में कठिनाई नहीं होती।

तीनों पिण्डियों के संयुक्त स्वरूप को ही माता वैष्णों देवी कहते हैं।

चरणगंगा के पावन और शीतल जल से पवित्र हुए चरणों से आगे बढ़ते हुए यात्री उस स्थान पर पहुंचते हैं, जहां अब नई गुफा बनी है। गुफा के अन्दर ताजी हवा का संचार हो जाने के कारण अब किसी भी यात्री को सांस लेने में कठिनाई नहीं होती। इसके अतिरिक्त जहां पहले चौबीस घंटों में 2200 यात्री दर्शन कर सकते थे अब 7600 यात्री बड़ी सुगमता से दर्शन कर सकते हैं। गुफा का द्वार 38 मीटर लम्बा, 1.8 मीटर चौड़ा और 2.2 मीटर ऊंचा है। इसका उद्घाटन डॉ. कर्णसिंह जी ने 20 मार्च 1977 को किया था।

इसी स्थान से माता के दरबार में जाने वाली कुल चौदह सीढ़ियां हैं। पहली बारह सीमेंट की तथा अन्तिम दो संगमरमर की। यह सीढ़ियां समाप्त होते ही मां भगवती का दरबार आ जाता है, जिसकी शोभा एकदम निराली है। प्राकृतिक शिलाखण्ड पर उभरी तीन पिण्डियां हैं। दक्षिण भग में महासरस्वती की, मध्य में वैष्णवी की तथा वामभाग में महाकाली की। मूल पराशक्ति एक है अतः

इसी एक पिण्डी के सात्विक, रातसिक और तामसिक भेद से तीन अलग-अलग रूप हो गए हैं। इसी कारण से माता महाकाली की पिण्डी काले रंग की, वैष्णवी की लाल रंग की और महासरस्वती की सफेद रंग की है। मध्यवर्ती पिण्डी अन्य दोनों से कुछ बड़ी है।

ये तीन पिण्डियां रजतपत्रों से मण्डित हैं तथा सबके सिर पर चाँदी के मुकुट और सोने के छत्र विराजमान हैं। देवी के तीन रूपों की प्रतीक इन पिण्डियों की पृष्ठभूमि में इन्हीं देवियों की साकार मूर्तियां स्थापित हैं। माता महाकाली की पिण्डी के पास इनकी दो मूर्तियां हैं— एक काले रंग की अष्टधातु की तथा दूसरी संगमरमर की। माता वैष्णों की पिण्डी के पीछे महाराजा गुलाबसिंह द्वारा समर्पित 67 तोले सोने की माता महालक्ष्मी की मूर्ति है जो कमल के आसन पर विराजमान है। इसके पीछे, गुफा के नए द्वार के उद्घाटन समारोह के अवसर पर डॉ. कर्णसिंह द्वारा समर्पित 22 तोले सोने से निर्मित सिंह सवार वैष्णों माता की मूर्ति है।



इसके अतिरिक्त जहां पहले चौबीस घंटों में 2200 यात्री दर्शन कर सकते थे अब 7600 यात्री बड़ी सुगमता से दर्शन कर सकते हैं। गुफा का द्वार 38 मीटर लम्बा, 1.8 मीटर चौड़ा और 2.2 मीटर ऊंचा है। इसका उद्घाटन डॉ. कर्णसिंह जी ने 20 मार्च 1977 को किया था।

इसी स्थान से माता के दरबार में जाने वाली कुल चौदह सीढ़ियां हैं। पहली बारह सीमेंट की तथा अन्तिम दो संगमरमर की। यह सीढ़ियां समाप्त होते ही मां भगवती का दरबार आ जाता है, जिसकी शोभा एकदम निराली है। प्राकृतिक शिलाखण्ड पर उभरी तीन पिण्डियां हैं। दक्षिण भग में महासरस्वती की, मध्य में वैष्णवी की तथा वामभाग में महाकाली की। मूल पराशक्ति एक है अतः इसी एक पिण्डी के सात्विक, रातसिक और तामसिक भेद से तीन अलग-अलग रूप हो गए हैं। इसी कारण से माता महाकाली की पिण्डी काले रंग की, वैष्णवी की लाल रंग की और महासरस्वती की सफेद रंग की है। मध्यवर्ती पिण्डी अन्य दोनों से कुछ बड़ी है।

ये तीन पिण्डियां रजतपत्रों से मण्डित हैं तथा सबके सिर पर चाँदी के मुकुट और सोने के छत्र विराजमान हैं। देवी के तीन रूपों की प्रतीक इन पिण्डियों की पृष्ठभूमि में इन्हीं देवियों की

साकार मूर्तियां स्थापित हैं। माता महाकाली की पिण्डी के पास इनकी दो मूर्तियां हैं- एक काले रंग की अष्टधातु की तथा दूसरी संगमरमर की। माता वैष्णों की पिण्डी के पीछे महाराजा गुलाबसिंह द्वारा समर्पित 67 तोले सोने की माता महालक्ष्मी की मूर्ति है जो कमल के आसन पर विराजमान है। इसके पीछे, गुफा के नए द्वार के उद्घाटन समारोह के अवसर पर डॉ. कर्णसिंह द्वारा समर्पित 22 तोले सोने से निर्मित सिंह सवार वैष्णों माता की मूर्ति है।

इसी प्रकार माता महासरस्वती की पिण्डी के पीछे भी एक पीतल की तथा एक संगमरमर की सरस्वती की मूर्ति है। माता वैष्णों के बिल्कुल सामने भगवान् शिव की सर्प से सुशोभित लघु आकार की पिण्डी है तथा बाईं ओर की दीवार में गणेश की प्राकृतिक मूर्ति है। गणेश की एक मूर्ति गुफा के प्रवेश द्वार के वाम भाग में भी बनी हुई है तथा गुफा-द्वार में प्रवेश करते ही बाईं ओर के शिला-खण्ड पर हनुमान जी की प्राकृतिक मूर्ति है। गुफा में भैरव की मूर्ति दिखाई नहीं दी, जबकि अन्य सभी शक्ति तीर्थों में भैरव की मूर्ति प्राप्त होती है। शास्त्र में भैरव शक्ति पीठों के रक्षको के रूप में वर्णित हुए हैं। इसके साथ ही माता वैष्णों के वाहन सिंह का पंजा भी गुफा में बना हुआ है जो हनुमान जी की मूर्ति से थोड़ी आगे गुफा की दाईं तरफ की दीवार में है।

इस प्रकार भक्तजन जी भरकर माता के दर्शन करने के उपरान्त, अपने को परम सौभाग्यशाली मानकर, माता की जय-जयकार करते हुए नई गुफा के रास्ते द्वारा बाहर आते हैं। बाहर आते ही सबसे पहले कन्या-पूजन होता है, फिर श्रद्धानुसार शालें एवं चुन्नियां इत्यादि बांटते हैं। अन्त में स्वयं भोजन कर वापसी यात्रा की तैयारी की जाती है।

माता वैष्णों देवी के कलयुग में

प्रकट होने की कथा

कहा जाता है कि लगभग 700 वर्ष पूर्व भक्त श्रीधर को, जो कटरा के निकटवर्ती गांव हंसाली के निवासी थे। माता के कन्या रूप में प्रत्यक्ष दर्शन हुए। उसी दिव्य-कन्या ने पंडित श्रीधर जी को समष्टि-भण्डारे का निमन्त्रण देने के लिए आदेश दिया। कन्या की आज्ञानुसार आस-पास के गांव तथा घरों में भण्डारे का निमन्त्रण देते समय पण्डित जी को गुरु गोरखनाथ व उनके शिष्य भैरोंनाथ मार्ग में मिल गए। उन्होंने जोगियों को प्रणाम करके अपने घर में होने वाले भण्डारे में पधारने को कहा। दूसरे दिन जब भण्डारे का समय हुआ तो अन्य लोग तथा दोनों योगीनाथ अपने 360 शिष्यों के दल-बल सहित पं. श्रीधर के निवास आ पहुंचे।

श्रीधर जी चिन्ता में बैठे थे, कि मुझमें तो इतने बड़े भण्डारे की सामर्थ्य नहीं, प्रबन्ध कैसे हो? तभी कन्या के रूप में माता ने स्वयं प्रकट होकर सबको उनकी इच्छानुसार भोजन देना प्रारम्भ कर दिया, जिसे लोग रुचि कर खाने लगे। यह देखकर श्रीधर प्रसन्न हुए और अन्य लोग हैरान! गोरखनाथ ने कन्या की परीक्षा लेने के लिए तर्क-वितर्क करना चाहा। भैरोंनाथ ने दिव्यकन्या से मांस-मदिरा का भोजन मांगा। इस पर कन्या ने उत्तर दिया कि जो एक वैष्णव भण्डारे में होता है वही मिलेगा। भैरों हठ करने लगा और जैसे ही उसने क्रोधवश कन्या को पकड़ना चाहा, वह अन्तर्ध्यान हो गई। इसके पश्चात् भैरवनाथ ने योगविद्या से कन्या को पवन-रूप होकर त्रिकूट-पर्वत की ओर जाते देखा तो उनका पीछा किया। बाणगंगा, चरण-पादुका, आदिकुमारी स्थानों से होते हुए वह सुन्दर गुफा तक जा पहुंचा। गुफा के द्वार पर ही माता चण्डी रूप धारण करके उसका वध कर दिया। प्रवेश-द्वार पर जो बड़ा पत्थर है, उसको भैरों का धड़ कहा जाता है। तलवार के तेज वार से भैरों का सिर उड़कर सामने की पहाड़ी पर गिरा, जहां आजकल भैरों मन्दिर बना हुआ है।

उधर भक्त श्रीधर को कन्या के अचानक चले जाने से अत्यधिक बचैनी थी।

उन्होंने खाना-पीना भी त्याग दिया था। परन्तु माता तो अपने भक्तों के दिल को जानती है। अतएव एक रात स्वपन में वैष्णों मां ने श्रीधर जी को दर्शन दिए और अपने धाम का दर्शन भी कराया। स्वपन में ही भक्त जी माता के साथ सम्पूर्ण यात्रा की। प्रातःकाल श्रीधर जी उठे तो प्रसन्न थे। स्वप्न में देखे स्थानों से उनका हृदय अब तक पुलकित था। उसी दिन से पंडित जी वैष्णों देवी के साक्षात् दरबार की खोज करने लगे। एक दिन स्वप्न में देखे अनुसार चलते-चलते गुफा का द्वार देख लिया और उसमें प्रवेश करके माता के दरबार के साक्षात् दर्शन करके जीवन सफल बना लिया। श्रीधर जी ने हाथ जोड़कर जगदम्बे की आराधना की। माता ने उन्हें चार पुत्रों का वरदान दिया और कहा कि तुम्हारा वंश मेरी पूजा करता रहेगा, सुख-शांति की प्राप्ति होगी। भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण होती रही। प्रचार बढ़ता रहा। हजारों, लाखों यात्री प्रतिवर्ष मां के दर्शनों के लिए आने लगे और वैष्णों देवी नाम से यह तीर्थ प्रसिद्ध हो गया।

श्री बूढ़े अमरनाथ की यात्रा

श्री बूढ़े अमरनाथ स्वामी का प्रख्यात ऐतिहासिक मंदिर पुंछ से 25 किलोमीटर दूर राजपुर-मंडी में स्थित है। प्राचीन ग्रंथ राज-तरंगिणी में भी इस महान ऐतिहासिक तीर्थ-स्थल का उल्लेख मिलता है। हिन्दू तथा मुसलमान इस तीर्थ-स्थल को समान रूप से मानते हैं। किंवदन्ति है कि अनेक आक्रामकों ने इस पवित्र तीर्थ स्थल आक्रमण करके इसे नष्ट करने की कोशिश की लेकिन वे सभी प्राकृतिक आपदाओं का शिकार होकर अपने प्राणों से हाथ धो बैठे। क्षेत्र के मुसलमानों का कहना है कि एक बार जब पाकिस्तानियों ने इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था, तो उनके कब्जे

के डेढ़ वर्ष की अवधि के दौरान, इस मन्दिर के साथ बहने वाले झरने का पानी सूख गया था लेकिन जैसे ही भारतीय सेना ने पाक आक्रमकों का कब्जा हटाया, भगवान शिव ने चमत्कारिक ढंग से झरने को फिर पानी से लबालब कर दिया।

यह मन्दिर, जो कि वर्षों तक भूमि में दबा रहा, इसके पता लगने का श्रेय महारानी चंद्रिका (महारानी लोरन) को है, जो भगवान शिव की कट्टर भक्त थीं तथा प्रतिवर्ष श्री अमरनाथ की यात्रा पर आया करती थीं। किन्हीं कारणों से वह एक बार यात्रा को नहीं आ सकीं। इस पर उन्होंने खाना-पीना छोड़ दिया। महारानी लोरन की भक्ति से प्रसन्न होकर शिव ने साधु के रूप में उन्हें दर्शन दिए तथा कहा कि वह लोरन नदी से तीन किलोमीटर दूर नीचे की तरफ जागर भगवान शिव के दर्शन पा सकती हैं। साधु के नेतृत्व में अपने हजारों अनुयायियों के साथ महारानी मन्दिर के वर्तमान स्थल पर पहुंची, जो कि धरती में काफी दबा हुआ था और इसके इर्द-गिर्द उगे वनस्पतियों के कारणच दिखाई नहीं देता था। इस पवित्र-स्थल पर पहुंचकर महारानी तथा श्रद्धालु भाव-विभोर होकर प्रार्थना में खो गए और इसी बीच नाटकीय ढंग से साधु वहां से गायब हो गया। लोगो ने उसे तलाशने की बहुतेरी



बालटल का सुन्दर दृश्य

कोशिशों की, लेकिन असफल रहे। अतः समझा जाने लगा कि वह साधु कोई और नहीं बल्कि साधु वेषधारी स्वयं भगवान शिव ही थे। तभी से इस मन्दिर का नाम बूढ़े अमरनाथ स्वामी पड़ गया।

एक किंवदन्ति यह भी है कि महाभारत काल में पांडवों ने यहां 13 वर्ष व्यतीत किए। स्थानीय लोगों की यह मान्यता भी है कि भगवान शिव ने पार्वती जी को इसी स्थान पर अमर कथा सुनाई थी।

शिवभक्तों के अटूट विश्वास और आस्था से जुड़ी है

श्री अमरनाथ यात्रा

आदिदेव भगवान शंकर के मां पार्वती को अमरकथा सुनाने की युगों पुरानी किंवदंतियों से जुड़ी श्री अमरनाथ गुफा एवं उसमें युगों से निरंतर हिम लिंग के बनने को अपनी आंखों से देखने की ललक प्राणियों में युगों से ही रही है।

काश्मीर (जिसे धरती का स्वर्ग के नाम से जाना जाता है) के आंचल में प्राकृतिक रूप से बनी गुफा के दिव्य दर्शनों को भक्त लुलाई-अगस्त माह में ही जाते हैं, क्योंकि श्रावण की

पूर्णिमा को यह यात्रा सम्पन्न हो जाती है। समुन्द्र तट से 12730 फुट की ऊंचाई पर 60 फुट चौड़ी, 25 फुट लम्बी एवं 15 फुट ऊंची अमरनाथ की यह गुफा इतनी मनोरम एवं भव्य है कि उसे शब्दों में व्यक्त किया ही नहीं जा सकता। काश्मीर की राजधानी श्रीनगर से 125 कि.मी. की दूरी पर स्थित इस गुफा तक जाने के लिए परम्परागत रास्ता अनन्तनाग से पहलगाम तक होते हुए जाता है। पहलगाम से सोलह किलोमीटर की दूरी पर प्रथम पड़ाव चंदनबाड़ी है, जहां से आगे शेषनाग व पंचतरणी से होता हुआ गुफा तक का रास्ता पैदल या घोड़ों से तय करना पड़ता है। श्री अमरनाथ की यह गुफा, चारों ओर से विशालकाय पहाड़ियों से घिरी हुई है, जो वर्ष भर हिमाच्छदित रहती है। नीचे बहती अमरगंगा के ऊपर बर्फ की मोटी सतह से बना बर्फ का पुल और चारों ओर की बर्फ से ढकी शिवभक्तों की मानसिक और शरीरिक थकान दूर करती चोटियां प्रकृति का एक मनोरम उपहार है।

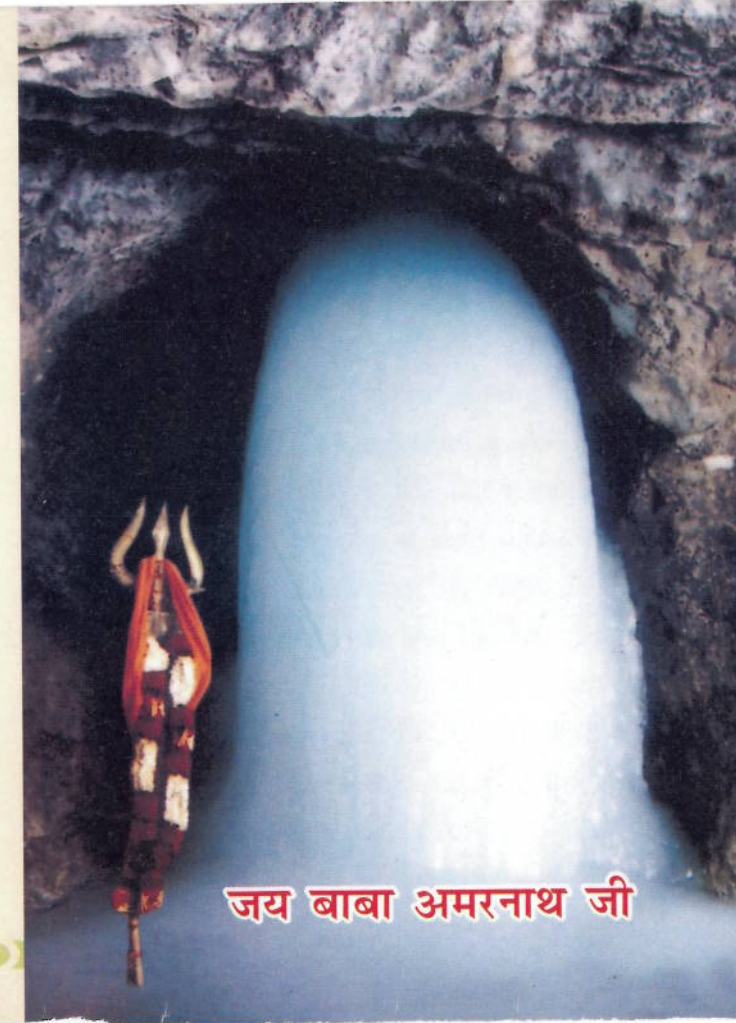
पैराणिक बाख्यानो के अनुसार भगवान श्री सदाशिव भोले भंडारी सर्वप्रथम श्रावणी पूर्णिमा को ही इस हिमलिंग में स्थित हो गए थे और हर श्रावणी पूर्णिमा को प्रकट होने का वर

दिया था। इसीलिए इसदिन बर्फानी बाबा अमरनाथ की गुफा तथा वहां बनने वाले हिमलिंग के दर्शनों का विशेष महत्व है। ऊबड़ खाबड़, बर्फाली पहाड़ियों के मध्य से चलकर जाने का यह रास्ता कठिन तो है मगर भगवान शंकर के आर्शिवाद से यह मार्ग आसानी से कट जाता है। श्रावणी सुदी को पंचमी को दर्शनार्थियों का जलूस प्रतिवर्ष श्रीनगर के शंकराचार्य-शादरा पीठाधीश्वर के नेतृत्व में चलता रहा है। आजकल श्रीनगर के दशनामी अखाड़ा से भूमि पूजन व ध्वजा पूजन के बाद छड़ी मुबारक भगवान शिव के झंडे के साथ स्वामी दीपेन्द्र गिरि के नेतृत्व में नागपंचमी के दिन जलूस की शक्त में चलती है जो श्रावण पूर्णिमा को पावन गुफा में पहुंचती है।

पहलगाम जो कभी नन्दीग्राम था, से यह यात्रा प्रारम्भ होती है। यात्री यहां रात्रि विश्राम करके प्रातःकाल चंदनबाड़ी के लिए सरकारी टैक्सियों में चलते हैं। पहलगाम में रात्रि विश्राम के लिए विभिन्न संस्थाओं द्वारा टैन्टों एवं मुफ्त लंगर का प्रबंध बड़े पैमाने पर होता है। चंदनबाड़ी से, जो पहलगाम से 15 कि.मी. दूर

9500 फुट की ऊंचाई पर है, अढ़ाई कि.मी. की दूरी पर पिस्सू घाटी है। यहां से जोजपाल होते हुए शेषनाग पर्वत की गोद से शांत व मनोरम शेषनाग झील के किनारे बने तम्बुओं के अस्थायी नगर में रात्रि विश्राम के लिए रुका जाता है। यहां ठहरने तथा भोजन की मुफ्त व्यवस्था भटिंडा की महादेव अमरनाथ सेवा समिति द्वारा की जाती है। तत्पश्चात् यात्रीगण 12300 फुट की ऊंचाई पर बावजन से बर्फ का पुल पार करके 14000 फुट ऊंचे महागुनस (गणेश टॉप) दर्रे पर पहुंचते हैं। आगे पंचतरणी तक की उतराई वाला मार्ग है। पंचतरणी से सात कि.मी. की दूरी पर पावन गुफा है। अधिकतर लोग यहीं पर रात्रि विश्राम करते हैं प्रातः गुफा के दर्शनों को चलते हैं। दर्शन करके रात्रि को पुनः यहीं पहुंचते हैं और उसी मार्ग से शेषनाग, चंदनबाड़ी होते हुए पहलगाम पहुंचते हैं। इस मार्ग के अतिरिक्त श्रीनगर से 92 किलोमीटर दूर सोनमर्ग के रास्ते भी एक मार्ग है जिसे बालताल मार्ग कहते हैं। इस रास्ते से यात्री एक दिन में दर्शन करके लौट आता है। यह मार्ग सेना द्वारा प्रयुक्त किया जाने वाला मार्ग है जो अत्यन्त धूल भरा एवं दुर्गम है। यह रास्ता बरसात के दिनों में बंद रहता है।

यात्रा करने के इच्छुक शिवभक्तों के लिए जरूरी है कि वे इस यात्रा पर जाने से पूर्व कुछ हिदायतों का पालन करें। यात्री अपने पास गर्म कपड़े, रेनकोट, छाता, टार्च, गर्म जुराब, मफलर, गर्म टोपी, आसानी से पहाड़ों पर चल सकने के लिए वाटर प्रूफ जूते एवं मुनुक्का, बादाम, किशमिश, व संतरे की टाफी साथ रखें। अपने साथ कंधे पर लटकाने के लिए हल्का-सा छोटा-सा बैग, जिसमें दो अढ़ाई किलो समान आ सके साथ रखें। हाथ में पकड़ने के लिए छड़ी चंदनबाड़ी से मिल जाती है और एक हल्की सी पानी की प्लास्टिक की बोतल साथ ले लें। खाने-पीने का सामान साथ उठाने की जरूरत नहीं। पहलगाम से गुफा तक के दोनों मार्गों में असंख्य संस्थाओं द्वारा लगाए गए लंगरों में हर वस्तु मुफ्त मिलती है। यात्रा पर जाने से पूर्व सारी स्थितियों की जानकारी रखें। समस्त विघ्नों के बावजूद शिवभक्तों पर आदिदेव की हमेशा से कृपा बनी रही है। भगवान शिव के श्री अमरनाथ गुफा में स्थित होने की यह रोमांचक यात्रा करके यात्री महसूस करेंगे कि व श्री अमरनाथ स्वामी को साक्षात् वहां मिलकर आए हैं।



जय बाबा अमरनाथ जी